ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

श्रावण २०८२ अगस्त २०२५

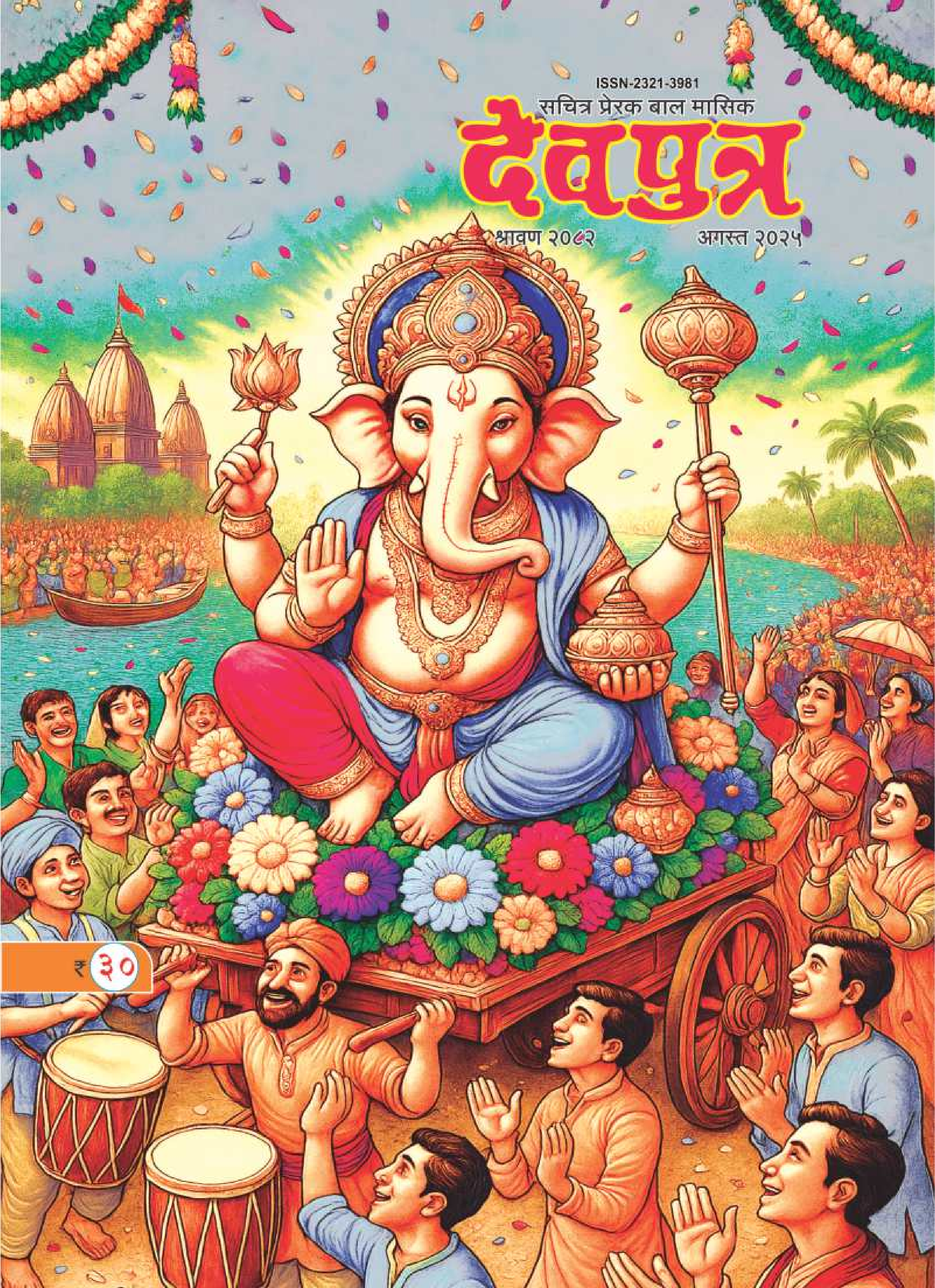

₹ ३०

पितांबरी®
रुचियाना™
द रिच टेस्ट!
शरारती रिश्ते का
मिठास भरा सेलिब्रेशन!
Pitambari®
Ruchiyana™
The Rich Taste!
Jaggery Powder
500 g
शक्कर के लिये
बेहतर विकल्प।
कोई भी रासायनिक
रंग और स्वाद
समाविष्ट नहीं।
५०० ग्राम में उपलब्ध
Pitambari Products Pvt. Ltd. Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599,
South: 6366932555, East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 6703 5564 / 5699,
Toll Free: 18001031299 | Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314.
Scan To Shop

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

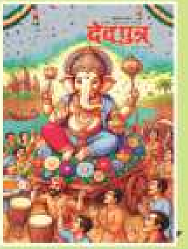

श्रावण	२०८२	वर्ष	४६
अगस्त	२०२५	अंक	२

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	३० रुपये
वार्षिक	२५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	२५०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:

व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com

संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

वैसे तो सावन-भादौ वनस्पतियों ही नहीं त्यौहारों से भी भरपूर माह है। रक्षाबंधन से लगाकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और श्री. गणेश चतुर्थी जैसे प्रमुख सांस्कृतिक पर्वों के मध्य ही हमारा राष्ट्रीय महापर्व स्वतंत्रता दिवस भी इस अगस्त माह में ही है। वैसे इन चार प्रमुख पर्वों का केन्द्रीय भाव एक ही है वह है 'रक्षा'।

रक्षाबंधन जहाँ रक्षा के पवित्र संकल्प का पर्व है वहीं जन्माष्टमी जिनका जन्मोत्सव है वे श्री कृष्ण भी धर्म रक्षक के रूप में प्रसिद्ध हैं। केवल बचपन में ही अनेक आतंककारी असुरों का वध करने वाले वे भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के अद्वितीय बालक हैं। दुर्भाग्य कहें या दृष्टिभेद पर हममें से अधिकांश श्रीकृष्ण के बाल्यकाल में उन्हें माखन चुरैया, बंसी बजैया और रासरचैया के रूप में ही पहचानते हैं लेकिन अघासुर, बकासुर, धेनुकासुर, पूतना, तृणावर्त आदि कितने असुरों का और अत्याचारी कंस का वध करने वाले वीर बालकृष्ण की छवि हमारी आँखों के सामने कम ही आती है। वे कालियमर्दन करके यमुना को प्रदूषण रहित करते हैं और गोवर्द्धन धारण कर पर्वतीय पर्यावरण को संरक्षित करते हैं **अपनी मातृभूमि और अपने समाज के लिए एक बालक का कर्त्तव्य ही उसे भगवान बना देता है।**

इसी मासान्त में श्रीगणेश की जयन्ती आ रही है। उनका तो प्रादुर्भाव ही अपनी माता पार्वती की सेवा और रक्षा के लिए हुआ बाल गणेश विद्या और वीरता में समान रूप से प्रथमक्रम पर रहने वाले ऐसे बालक हैं जो माता की आज्ञा का पालन करते हुए स्वयं महादेव का भी प्रतिरोध करने में नहीं टलते, चाहे फिर उन्हें अपना मस्तक ही क्यों न कटवाना पड़ा हो। शीश कटाकर भी मातृ रक्षा का संदेश देते हैं बाल गणेश।

हम स्वतंत्रता का पावन पर्व मनाते समय स्मरण रखें कि माँ और मातृभूमि की सेवा, सुरक्षा, सम्मान हमारे चरित्र का तिरंगा बने। निश्चय ही हमारी भारतमाता और देवी स्वतंत्रता इससे आनंदित होंगी। गर्व से कहें- **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**। इन समस्त पर्वों के लिए मेरी शुभकामनाएँ। जय भारत।

आपका

बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- असली विजेता -संजीव जायसवाल 'संजय' ०८
- बादल और बच्चे -कन्हैया साहू 'अमित' २२
- सुरभि की सीख -दीनदयाल शर्मा ३२
- घमण्डी शेर -माणक तुलसीराम गौड़ ३९

छोटी कहानी

- देखा इन्द्रधनुष -मनोहर चमोली 'मनु' ०५
- सोनू और लालपरी -वीरेन्द्र बहादुर सिंह ४३

लघुकथा

- स्वाभिमान -आशीष सकलेचा ४२
- तिरंगा -शैलजा भट्टड़ ४४

आलेख

- रक्षाबंधन के अर्थ -प्रियंका सौरभ ३४

अनुवाद

- बंटी के सूरज दादा -रजनीकांत एस. शाह १४

प्रेरक प्रसंग

- धरना -पुष्पेश कुमार 'पुष्प' ०६
- ध्यानचंद का जादू -राजेश गुजर ४५

कविता

- राखी के छन्द -कृष्णकांत 'सांचीहर' ०७
- तुलसी जयंती -विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' १२
- नवयुग के भविष्य -अनुराधा तिवारी 'अनु' २४
- हम सकते क्या भूल कभी -अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' २५
- झूमे बहना भाई -डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' ३१
- सदा तिरंगा यूँ लहराए -डॉ. सत्यवान सौरभ ४१
- वर्षा रानी -डॉ. भेरूँलाल गर्ग ४२
- चिड़िया रानी आओ ना -गोपाल माहेश्वरी ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १७
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी २१
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी ३०
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ३६
- छ: अँगुल मुस्कान - ४५
- आपकी पाती - ४७
- पुस्तक परिचय - ५०

बौद्धिक क्रीडा

- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी १६
- बाल पहेलियाँ -संतोष कुमार मालवीय ४८

चित्रकथा

- लाल बुझक्कड़ काका..... -देवांशु बत्स १३
- श्री गणेश को दूब क्यों पसंद..... -संकेत गोस्वामी २६

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

देखा इन्द्रधनुष

– मनोहर चमोली 'मनु'

वर्षा थमी तो हाथी घूमने निकल पड़ा। अचानक उसकी नजर आसमान की ओर गई। वह चूहे के बिल के पास गया। हाथी ने चूहे को आवाज लगाई– ''अरे भाई! बाहर तो निकल। देख इन्द्रधनुष निकल आया है। कितना सुंदर लग रहा है। कितना प्यारा इन्द्रधनुष है।''

चूहा पलक झपकते ही बाहर निकल आया। आसमान में सतरंगी इन्द्रधनुष को देखकर वह मारे खुशी से चिल्ला उठा। उसने हाथी से कहा– ''वाह! क्या बात है। काश मैं भी तुम्हारी तरह लंबी–चौड़ी कद–काठी वाला होता तो एक झटके में तुम्हारे गाल चूम लेता।''

हाथी ने हवा में सूँड हिलाते हुए कहा– ''इसमें कौनसी कठिनाई है। ये लो। अपनी इच्छा पूरी कर लो। मेरी ये बीस फुट की सूँड कब काम आएगी।'' हाथी ने दूसरे ही क्षण चूहे को सूँड से उठाकर अपने गाल पर रख दिया। दोनों हँसने लगे।

चूहे ने इन्द्रधनुष की ओर देखते हुए हाथी से पूछा– ''एक बात तो बताओ। ये इन्द्रधनुष प्रतिदिन क्यों नहीं निकलता?''

हाथी ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया– ''ओह! ये तुम्हारे प्रश्न तो हमेशा कठिनाई में डाल देते हैं। वास्तव में इन्द्रधनुष वर्षा के बाद ही निकलता है। कारण स्पष्ट है। वर्षा होने के बाद हवा में पानी के नन्हें कण रह जाते हैं। जैसे ही सूर्य की किरणें उनमें से होकर निकलती हैं तो वे सात रंग के इन्द्रधनुष का आकार ले लेते हैं।''

चूहा बोला– ''ओह! समझ गया। तो ये बात है। लेकिन इनमें सात रंग कौन–कौन से होते हैं? मुझे तो सात नहीं दिखाई दे रहे हैं।''

हाथी ने हँसते हुए कहा– ''तुम पिद्दी भर के तो हो। अरे! सात रंग तो मुझे भी अपनी आँख से नहीं दिखाई दे रहे हैं। इन्द्रधनुष के सातों रंगों को देखने के लिए दूरबीन लानी पड़ती है। समझे। लेकिन मुझे

इसके रंग पता है। पहला लाल, फिर दूसरा नारंगी, फिर पीला, हरा, नीला, आसमानी और बैंगनी रंग होता है। आया समझ में। इन्हें पाठ कर लेना।''

चूहा सिर हिलाते हुए कहने लगा– ''समझ गया। लेकिन ये पश्चिम दिशा में ही क्यों निकला हुआ है?''

हाथी ने हँसते हुए कहा– ''आज तो तेरा दिमाग खूब चल रहा है। सही बात तो ये है कि ये सूर्य के ठीक विपरीत दिशा में ही दिखाई देता है। सूर्य का प्रकाश बूँदों पर पड़ने से सूरज की ओर खड़े होने से ही हमें ये इन्द्रधनुष दिखाई देता है। सुबह पश्चिम में और शाम को पूरब में। समझे?''

चूहा सिर हिलाते हुए बोला– ''समझ गया।''

हाथी ने कहा– ''आसमान में दिखाई देने वाला इन्द्रधनुष प्राकृतिक है। तुम चाहो तो कृत्रिम इन्द्रधनुष भी देख सकते हो।''

चूहा बोला– ''वो कैसे भला?''

हाथी ने बताया– ''किसी फव्वारे के पास जाओ। सूरज की ओर पीठ करो। यदि फव्वारे के पानी में फैलाव होगा तो तुम्हें सूरज की विपरीत दिशा की ओर यानि पश्चिम में छोटा–सा इन्द्रधनुष दिखाई देगा। बहुत ऊँचाई से गिरने वाले झरने के पास भी हम इन्द्रधनुष को देख सकते हैं। लेकिन इसके लिए हमें सूरज और पानी की बूँदों के बीच स्वयं को सही स्थान पर खड़ा करना होगा।''

चूहे के कान खड़े हो गए। वह बोला– ''समझ गया। ये कृत्रिम इन्द्रधनुष को देखने के लिए थोड़ा परिश्रम करना होगा?''

तभी हाथी ने घात लगाती हुई बिल्ली को देख लिया। बिल्ली चूहे पर झपटने ही वाली थी कि हाथी ने चूहे को सचेत कर दिया।

चूहा बोला– ''समझ गया। मैं चला बिल में।'' यह कहकर चूहा बिल में जा घुसा। बेचारी बिल्ली हाथ मलती रह गई। उसने हाथी को घूरा। हाथी ने सूँड में पानी भरा और बिल्ली पर छिड़क दिया। पानी से तर–बतर बिल्ली उलटे पाँव भागने लगी।

– पौड़ी गढ़वाल
(उत्तराखण्ड)

प्रेरक प्रसंग–बलिदान दिवस ११ अगस्त

धरना – पुष्पेश कुमार 'पुष्प'

एक दिन खुदीराम बोस एक मंदिर में गए। वहाँ कुछ लोग मंदिर के सामने भूखे–प्यासे धरना देकर पड़े थे। पूछने पर पता चला कि ये सभी लोग किसी न किसी असाध्य रोग से पीड़ित हैं। इसी कारण मन्नत मानकर यहाँ भूखे–प्यासे पड़े हैं कि भगवान इन्हें स्वप्न में दर्शन देंगे, तब ये अपना धरना समाप्त करेंगे।

इस पर खुदीराम बोले– ''मुझे भी तो एक दिन इसी प्रकार भूखे–प्यासे धरना देना है।''

पास में खड़े एक व्यक्ति ने उनसे पूछा– ''तुम्हें ऐसा कौनसा असाध्य रोग हो गया है जो तुम यहाँ पर धरना दोगे?''

खुदीराम मुस्कराकर बोले– ''क्या गुलामी से भी बढ़कर कोई असाध्य रोग हो सकता है? मुझे तो उसी गुलामी के रोग को दूर करना है।''

– बाढ़ (बिहार)

राखी के छन्द

– कृष्णकांत सांचीहर

कुमकुम नारिकेल[1], अक्षत से भरी थाल, मोदक मिठाई सजे, राखी धरी थाल है।
भगिनी है सजी–धजी, भागिनेय[2] संग सोहे, रक्षा हेतु सूत्र बाँधे, आयो शुभ काल है।।
भ्राता की कलाई पर, सहोदरा[3] प्यार बाँधे, भाल पे तिलक करें, शोभा लाल–लाल है।
अनुपम अद्वितीय भ्राता–भगिनी का प्रेम, स्नेह का है दृढ़ बंध अनूठी मिसाल है।।

खूब चमकाई, कलाई, आज मैंने, राखियाँ, इस पर सजेंगी, जानता हूँ।
भाल उन्नत धो दिया, सोने सरीखा, भाल पर, कुमकुम सजेगा, जानता हूँ।।
रुच गई, जो भी मिठाई, खाऊँगा मैं, हाथ बहनों का लगेगा, जानता हूँ।
नारिकेलों, से सजा है, थाल देखा, हाथ में उसके रखूँगा, जानता हूँ।
खिलखिलाहट, सदन[4] को, गुंजित करेगी, प्यार फिर, आया सदन में, जानता हूँ।
हाथ में, रूमाल लेकर, घूमता हूँ, प्रेम नयनों से, बहेगा, जानता हूँ।।

१ नारियल, २ भतीजा, ३ बहन, ४ घर।

– कांकरोली राजसमंद (राजस्थान)

असली विजेता

– संजीव जायसवाल 'संजय'

रॉकी कछुआ बहुत घमंडी था। हमेशा डींगे हाँकता रहता कि उसके दादाजी ने बहुत बहादुरी से खरगोश को दौड़ में हरा दिया था।

वह सभी को अपने साथ दौड़ लगाने की चुनौती भी देता रहता। उस जंगल के सभी जानवर सीधे–सादे थे। सबको ज्ञात था कि खरगोश रास्ते में सो गया था, इसलिए हार गया था। किन्तु हर बार तो ऐसा नहीं हो सकता। फिर रॉकी तो इतना धीरे–धीरे चलता था कि इसे कोई भी हरा सकता था। सभी सोचते कि यदि रॉकी को हरा दिया तो इसे बहुत दु:ख होगा। इसलिए कोई भी उसके साथ दौड़ने के लिए तैयार नहीं होता था।

रॉकी इसे अपनी जीत समझता। उसे लगता कि हार के डर से कोई भी उसके साथ दौड़ने को तैयार नहीं होता है। इससे उसका घमंड बढ़ता ही जा रहा था। भीमा हाथी जंगल का सबसे ताकतवर जानवर था। जब चलता तो दूसरे जानवर रास्ता खाली कर देते थे। जब दौड़ लगाता तो कोई उसे छू भी नहीं सकता था। एक दिन भीमा कहीं जा रहा था। मार्ग में रॉकी मिल गया। उसने टोका– ''भीमा सेठ! कहाँ जा रहे हो?''

''कहीं नहीं! बस यूँ ही घूमने निकला हूँ।'' भीमा ने सूँड़ हवा में उठाते हुए बताया।

''फालतू में क्यों घूम रहे हो? चलो मुझसे दौड़ने की शर्त लगा लो।'' रॉकी ने हँसते हुए कहा।

भीमा ने रॉकी को गौर से देखा फिर पूछा– ''तुम वही हो न, जिसके दादाजी ने खरगोश को हराया था?''

''हाँ! मैं वही हूँ।'' रॉकी ने गर्व से अपना सीना फुलाया फिर बोला– ''मेरे दादाजी का दबदबा अभी तक बना हुआ है। इसीलिए इस जंगल में किसी की मेरे साथ दौड़ लगाने की हिम्मत नहीं होती है।''

''तुम्हारी बहादुरी के चर्चे मैंने भी बहुत सुने हैं, लेकिन सोचता हूँ कि...'' भीमा कुछ कहते–कहते रुक गया।

''कि यदि कहीं हार गया तो नाक कट जाएगी और बिना नाक का हाथी भला किस काम का?'' रॉकी ने ठहाका लगाते हुए वाक्य पूरा किया।

''नहीं–नहीं?! मैं सोचता हूँ कि जंगल में बहुत दिनों से कोई तमाशा नहीं हुआ। इसलिए चलो, तुम्हारे साथ दौड़ लगा ही ली जाए।'' भीमा ने उसकी बात काटी। यह सुन रॉकी ने भीमा को नीचे से ऊपर देखा फिर बोला– ''एक बार फिर से सोच लो। तुम हाथी लोग तो खरगोशों से धीमा दौड़ते हो। यदि कहीं हार गए तो बहुत बदनामी होगी।''

''अब सोचना–विचारना क्या? जो कह दिया सो कह दिया।'' भीमा ने अपने कान हिलाए फिर थोड़ी ही दूरी पर खड़े पिंटू बंदर से बोला– ''पूरे जंगल में घोषणा कर दो कि कल सुबह मेरी और रॉकी की दौड़ होगी। सभी देखने आ जाएँ।''

''यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं अभी पूरे जंगल में डुगडुगी पीट आता हूँ।'' पिंटू खुशी से बोला। रॉकी की डींगे सुन–सुनकर उसके भी कान पक चुके थे।

''लेकिन यह दौड़ होगी कहाँ?'' पिंटू ने पूछा।

''यह मैं बताऊँगा।'' रॉकी झट से बोल उठा।

''ठीक है, तुम्हीं बताओ।'' भीमा मान गया।

रॉकी घमंडी होने के साथ–साथ चालाक भी था। जंगल के दूसरे छोर पर एक बड़ी–सी नदी बहती थी। वन देवी के मंदिर से वहाँ तक जाने वाले रास्ते में गन्ने के कई खेत पड़ते थे। उनमें से एक खेत भीमा का भी था। रॉकी को ज्ञात था कि हाथियों को गन्ने बहुत पसंद होते हैं और खेत देखकर वह उन्हें खाए बिना नहीं रह सकते। अत: थोड़ी देर तक सोचने का नाटक

करने के बाद बोला– ''वन देवी के मंदिर से नदी तक दौड़ लगाई जाए। जो वहाँ पहले पहुँचेगा, उसे जीता माना जाएगा।''

यह सुन भीमा भी खुश हो गया। वह कई दिनों से अपने खेतों की ओर जाने की सोच रहा था किन्तु समय नहीं निकाल पा रहा था। उसे लगा कि इससे तो एक पंथ दो काज हो जाएँगें। रॉकी को तो वह चुटकियों में हरा देगा और रास्ते में अपने खेतों को भी देख लेगा।

पिंटू ने घर जाकर अपनी ढोल उठाई। उसे गले में लटका पूरे जंगल में डुगडुगी पीटने लगा– ''सुनो–सुनो–सुनो। सभी जंगलवासियो! सुनो। कल सुबह वन देवी के मंदिर से भीमा हाथी और रॉकी कछुए के बीच दौड़ होगी। दोनों में से जो नदी तक पहले पहुँचेगा, उसे जीता माना जाएगा। सुनो–सुनो–सुनो...।''

अनोखी दौड़ देखने के लिए अगली सुबह मंदिर के पास भारी भीड़ जमा हो गई। कुछ उत्साही सीधे नदी के किनारे पहुँच गए ताकि जीतने वाले का स्वागत किया जा सके।

रॉकी पूरी तैयारी से आया था। भालू दादा के सीटी बजाते ही वह अपने नन्हें–नन्हें कदम बढ़ाते हुए दौड़ पड़ा। उधर भीमा काफी देर तक वहीं खड़ा रॉकी की चाल देखता रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस चाल से रॉकी आज नदी तक पहुँच पाएगा भी या नहीं ?

रॉकी जब थोड़ी दूर निकल गया तब भीमा ने भी अपने कदम बढ़ाए। कुछ डग भरते ही वह रॉकी से काफी आगे निकल गया किन्तु रॉकी को कोई चिंता नहीं हुई। उसे ज्ञात था कि रास्ते में गन्ने के खेत हैं और भीमा गन्ना खाए बिना नहीं रह सकता। मन ही मन अपनी योजना पर मुस्कराता हुआ वह धीरे–धीरे आगे बढ़ता रहा।

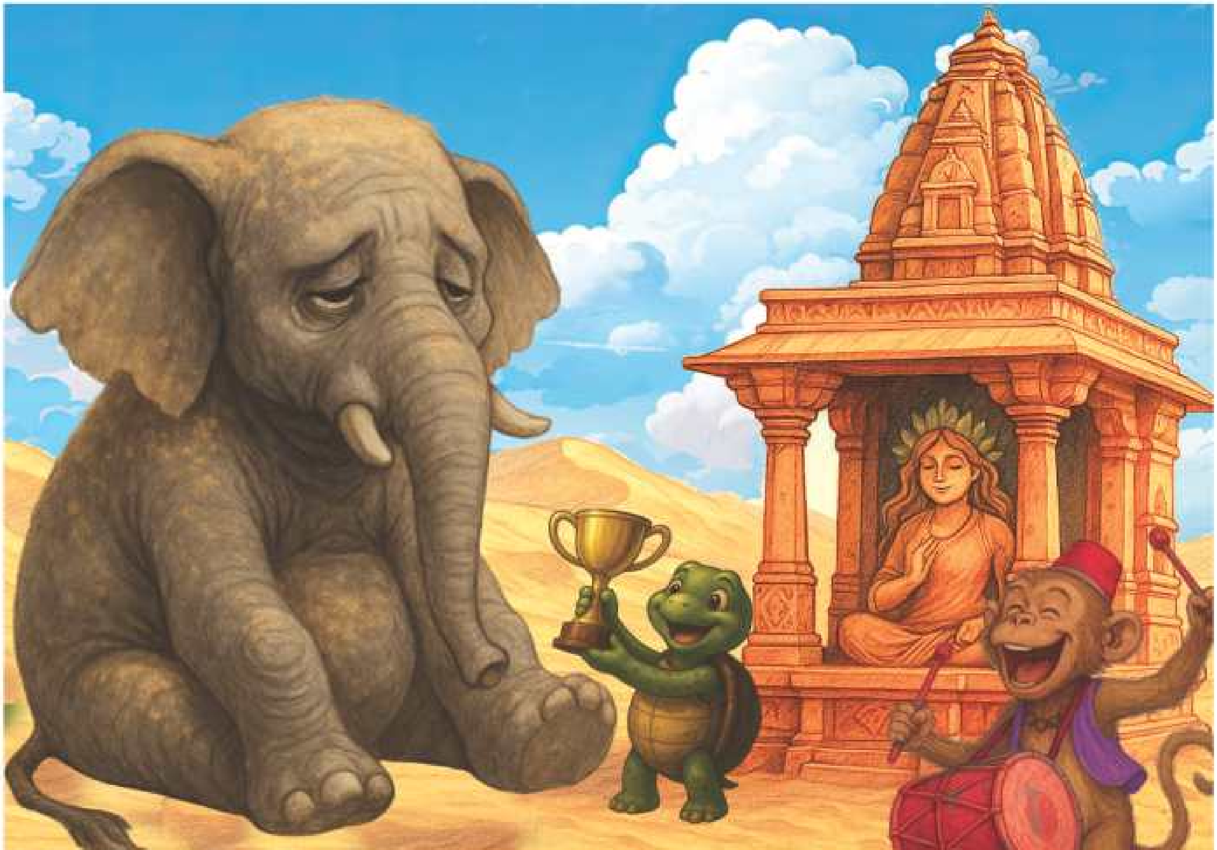

भीमा के खेतों में इस वर्ष गन्ने की फसल बहुत अच्छी हुई थी। भीमा जब वहाँ पहुँचा तो चौंक पड़ा। दो दिन पहले चली तेज हवाओं से लंबे–लंबे गन्ने गिर गए थे। भीमा को लगा इस तरह तो सारे गन्ने खराब हो जाएँगे। उसने नीचे पड़े चार गन्नों को खड़ा किया फिर उन्हीं की पत्तियों से उन्हें बाँध दिया। इससे चारों गन्ने सीधे हो गए। गिरे हुए गन्नों को सीधा करने का यह बहुत पुराना प्रयोग किया हुआ उपाय था।

भीमा जल्दी–जल्दी पूरे खेत के गन्नों को सीधा करके बाँधने लगा। इस धुन में वह दौड़ की बात पूरी तरह भूल गया। सारे गन्ने सीधे करते–करते दोपहर हो गई। भीमा बुरी तरह थक गया था और प्यास से उसका गला सूखने लगा था। 'चलो थोड़े से गन्ने खा लिए जाएँ' उसने अपनी सूँड़ से माथे पर आ गए पसीने को पोंछते हुए सोचा। उसने थोड़े से गन्ने तोड़े और आराम से उन्हें खाने लगा। गन्ने बहुत मीठे थे। वह एक के बाद एक गन्ने खाता रहा। लगभग पचास गन्ने खाने के बाद उसे कुछ राहत मिली।

''वाह! आनंद आ गया।'' उसने मुँह ऊपर कर एक लंबी डकार मारी।

''आनंद तो तब आएगा जब रॉकी तुमसे पहले नदी पहुँच जाएगा।'' तभी उसके दिमाग ने उसे झकझोरा। अपने गन्नों की बर्बादी देख उसके दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था लेकिन थकान और प्यास मिटने पर वह चौकन्ना हो गया था।

रॉकी और दौड़ की बात याद आते ही भीमा बुरी तरह घबरा उठा। अपनी लापरवाही के चलते यदि आज वह हार गया तो उसकी नाक कट जाएगी। उसने सिर उठाकर आसमान की ओर देखा। सूरज अपनी पूरी शक्ति से आग बरसा रहा था जिसके कारण लू चलने लगी थी।

'कोई बात नहीं। अभी वह आराम से नदी तक पहुँच सकता है।' भीमा ने सोचा और उठकर तेजी से भाग लिया। उधर हर बीतते पल के साथ गर्मी बढ़ती जा रही थी। थोड़ी ही देर में भीमा पसीने से तर हो गया और प्यास से उसका गला फिर सूखने लगा। किन्तु वह दौड़ता ही रहा, दौड़ता ही रहा। वह किसी भी कीमत पर कछुए से हारना नहीं चाहता था।

रेतीली मिट्टी शुरू हो गई थी। इसका अर्थ नदी निकट आने वाली है। भीमा ने अपनी चाल और तेज कर दी। थोड़ी ही देर में मिट्टी पूरी तरह से समाप्त हो गई और चारों ओर रेत ही रेत दिखाई देने लगी। किन्तु तेज धूप के कारण वह रेत भट्टी की तरह गरम हो गई थी और उससे पैर जले जा रहे थे। किन्तु भीमा दौड़ता ही रहा क्योंकि यह केवल उसकी नहीं बल्कि सभी हाथियों के सम्मान की बात थी। यदि वह हार गया तो कई पीढ़ियों तक कछुए इसके गीत गाते रहेंगे।

सूरज धीरे–धीरे तपता जा रहा था। तेज गर्मी से भीमा की साँस फूलने लगी और वह बुरी तरह हाँफने लगा था। तभी उसने देखा तपती हुई रेत में रॉकी भी धीरे–धीरे– आगे बढ़ रहा है।

कछुए मिट्टी और पानी दोनों जगह रह लेते हैं। इसलिए रॉकी बिना रूके बहुत आराम से यहाँ तक आ गया था किन्तु तपती रेत में उसके पैर बुरी तरह जलने लगे थे। उसका भी गला प्यास से सूखा जा रहा था। लग रहा था कि अब वह नदी तक नहीं पहुँच पाएगा और इस तपती हुई रेत में ही उसकी जान निकल जाएगी। वह उस पल को कोस रहा था जब उसने नदी तक दौड़ने की शर्त लगाई थी। किन्तु अब पीछे भी लौट पाना संभव न था इसलिए आँसू बहाते हुए वह किसी तरह आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहा था।

लंबे डग बढ़ाते हुए भीमा जब रॉकी के निकट पहुँचा तो चौंक पड़ा। उसकी हालत देख वह समझ गया कि रॉकी का नदी तक पहुँच पाना संभव नहीं है। उसने सोचा कि रॉकी को उठाकर अपनी पीठ पर बैठा ले किन्तु दौड़ के नियमों में एक–दूसरे को छूना या धक्का देना मना था। तो फिर इसकी जान कैसे बचाई जाए? भीमा सोच में पड़ गया। जंगल के दूसरे

जानवरों की तरह वह भी बहुत दयालु था। इसलिए किसी को संकट में देख, सहायता किए बिना नहीं रह सकता था।

अचानक उसे एक उपाय सूझा। अपने चारों पैरों को फैलाकर वह रॉकी के ऊपर आ गया और उसी की तरह बिल्कुल धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। भीमा के लंबे-चौड़े शरीर की छाया जब रॉकी के ऊपर पड़ी तो उसे बहुत राहत मिली। वह धीरे-धीरे खिसकता हुआ आगे बढ़ता रहा।

चाल धीमी कर देने से भीमा की हालत और खराब होती जा रही थी। किन्तु वह जानता था कि यदि इस तपती रेत में रॉकी को अकेला छोड़ देगा तो उसकी जान बचना कठिन हो जाएगी। इसलिए वह उसी तरह चलता रहा।

नदी बिलकुल निकट आ गई थी। कई जानवर उसके पानी में खड़े थे। उन दोनों को आता देख वे सब जोश से चिल्लाने लगे। अब तक भीमा की भी हालत काफी खराब हो गई थी। नदी के निकट पहुँच उसने जीतने के लिए अपना कदम तेजी से आगे बढ़ाया किन्तु उसे चक्कर आ गया और वह लहरा कर नीचे गिरने लगा। उसने अपनी सूँड बढ़ाकर नदी के पानी को छूने का प्रयत्न किया किन्तु सफलता न मिली। उसे नीचे गिरता देख रॉकी को लगा कि वह दब जाएगा। अपनी जान बचाने के लिए वह तेजी से भागा और नदी के पानी तक पहुँच गया।

''रॉकी जीत गया, रॉकी जीत गया।'' कई जानवर उसे ऊपर उठाकर चिल्लाने लगे।

''नहीं! मैं नहीं जीता। असली जीत भीमा की हुई है।'' रॉकी ने कहा।

''वह तो नदी के पानी तक पहुँचा ही नहीं, उससे पहले ही गिर गया है। उसे कैसे जीता हुआ मान लिया जाए?'' चिंकी बारहसिंगा ने कहा।

''भीमा चाहता तो कब का नदी तक पहुँच सकता था लेकिन...।''

''लेकिन क्या?'' भोलू उदबिलाव ने उसकी बात काटी।

''लेकिन तपती हुई रेत से मेरी जान बचाने के लिए वह अपनी छाया मुझे देते हुए धीरे-धीरे चल रहा था। यदि वह मेरी सहायता न करता तो आज मेरी जान चली जाती।'' रॉकी ने रुँधे स्वर में बताया। भीमा का त्याग देख उसका मन पश्चाताप से भर उठा था। ''इसका मतलब असली विजेता भीमा ही है।'' कालू लोमड़ ने कहा।

''हाँ! वही असली खिलाड़ी है और असली विजेता भी।'' रॉकी ने सिर हिलाया फिर बोला- ''लेकिन अब उसकी जान खतरे में है। जल्दी से उस तक पानी पहुँचाओ।''

यह सुन सभी जानवर अपने हाथों से भीमा के ऊपर पानी उछालने लगे। पानी पड़ने से भीमा के शरीर को कुछ राहत मिली। थोड़ी ही देर में उसने अपनी आँखें खोल दीं। इतने लोगों को अपने ऊपर पानी डालता देख वह धीरे से खड़ा हो गया।

यह देख रॉकी खुशी से चिल्लाया- ''भीमा भाई!''

''जिंदाबाद-जिंदाबाद'' सारे जानवर हाथ उठाकर चिल्लाए।

''असली विजेता'' रॉकी ने नारा बुलंद किया।

''भीमा भाई-भीमा भाई।'' सारे जानवरों ने उत्तर दिया। अपने साथियों का प्यार देख भीमा की आँखें भर आईं। रॉकी ने आगे बढ़कर उससे क्षमा माँगी और पुन: किसी के सामने डींग न हाँकने का वायदा करने लगा। यह देख भीमा हँस पड़ा। उसने अपनी सूँड से पानी भर-भरकर फव्वारे की तरह अपने शरीर पर डाला। जब कुछ राहत मिली तो उसने रॉकी को अपनी पीठ पर बैठा लिया और जंगल की ओर लौट पड़ा। बाकी जानवर उसके जिंदाबाद के नारे लगाते हुए साथ चल रहे थे।

- लखनऊ (उ. प्र.)

तुलसी जयन्ती

– विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

रामचरित मानस के गायक।
हिन्दी कविता के उन्नायक।।
भारत की हताश जनता को,
तुमने ही की शक्ति प्रदान।
कविवर तुलसीदास महान।।

व्यक्ति–व्यक्ति में भक्ति जगा दी।
ईश्वर से अनुरक्ति जगा दी।।
कर समाज का नव उद्बोधन,
लाए एक नवीन विहान।
कविवर तुलसीदास महान।।

हरा अँधेरा मानव मन का।
पंथ दिखाया शुचि जीवन का।।
दिया अमर सन्देश विश्व को,
दूर किया सबका अज्ञान।
कविवर तुलसीदास महान।।

करते हम श्रद्धांजलि अर्पित।
भाव–सुमन कर रहे समर्पित।।
पुष्प चित्र पर चढ़ा रहे हैं,
देता सारा जग सम्मान।
कविवर तुलसीदास महान।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

बंटी के सूरज दादा

मूल गुजराती – पुष्पा अंताणी
हिन्दी अनुवाद – रजनीकांत एस. शाह

बंटी ने दीपावली की रात बहुत सारे पटाखे जलाए। देर रात तक मजा करता रहा। फिर वह थककर सो गया। दूसरा दिन था नए वर्ष का। गुजरात में दीवाली के दूसरे दिन नया वर्ष मनाया जाता है। माँ ने सुबह बंटी को जल्दी जगाया।

''उठो बेटा बंटी! हमें सभी को नए वर्ष की शुभकामनाएँ देने के लिए जाना है... देर हो रही है। जल्दी उठ जाओ।''

बंटी जागकर बिस्तर पर बैठ गया। दोनों हाथ जोड़कर और आँखें मूँदकर भगवान से प्रार्थना करने लगा। बाद में खिड़की के पास जाकर खड़ा हुआ।

आ... हा... हा... सामने पूर्व दिशा के आकाश में कैसे लाल–लाल, चमकीले और गोल–गोल बहुत बड़े सूरज दादा दिखाई दे रहे थे।

बंटी बोल उठा– ''सुप्रभातम्, सूरज दादा!''

सूरज दादा ने भी बंटी को सुप्रभातम् कहा।

बंटी ने कहा– ''सूरज दादा! आज तो आप कैसे महाकाय लग रहे हो! मैंने आपको कभी इतना बड़ा नहीं देखा। आज नए वर्ष की सुबह है इसलिए? सूरज दादा।''

सूरज दादा ने कहा– ''मैं तो प्रतिदिन सुबह इतना ही बड़ा होता हूँ। तुम यदि रोज सुबह जल्दी उठकर मुझे देखोगे तो मैं तुम्हें ऐसा ही दिखाई दूँगा।''

बंटी ने कहा– ''मुझे तो बड़ा मजा आया। अब से मैं रोज सुबह जल्दी उठ जाऊँगा। आप मेरी प्रतीक्षा करना, चले नहीं जाना। आज तो मुझे सबको नए वर्ष की शुभकामनाएँ देने के लिए जाना है। आपको भी नए वर्ष की शुभकामना, सूरज दादा!''

सूरज दादा मुस्कुराने लगे। उन्होंने भी बंटी को नए वर्ष के लिए आशीर्वाद दिया।

दूसरे दिन से बंटी ने अपने आप ही जल्दी उठना प्रारंभ कर दिया। प्रतिदिन सुबह उठकर, खिड़की के पास जाकर वह सूरज दादा के साथ बातें करने लगा।

''सूरज दादा! आप मुझे बहुत अच्छे लगते हो। आप कितने चमकदार हो! मुझे भी आपके जैसा बनना है.. कैसे बनूँ?''

सूरज दादा ने कहा– ''खूब पढ़ो बंटी! जितना अधिक पढ़ोगे, उतने अधिक चमकदार होते जाओगे।''

''तो सूरज दादा! आप प्रतिदिन प्रातः जल्दी जाग जाते हो? कभी देरी से नहीं उठते?'' बंटी ने नया प्रश्न पूछा।

''ना बेटा! मुझे देरी से उठना पसंद ही नहीं। मेरे आने के बाद, पृथ्वी पर मेरी किरणें पहुँचती हैं और उसके बाद ही सुबह होती है। इसलिए मैं देरी से उठ ही नहीं सकता।''

इस प्रकार सूरज दादा और बंटी के बीच प्रतिदिन नई–नई बातें होने लगीं। कुछ समय के बाद सर्दियाँ प्रारंभ हुई। ठंड बढ़ने लगी। बंटी को उसकी माँ रात के समय कंबल ओढ़ाकर सुला देती थी। बंटी ने जाड़े में भी जल्दी उठने का नियम जारी रखा। जब वह उठता, तब ठंड अधिक लगती, पर खिड़की के पास पहुँचते ही सूरज दादा उस पर किरणों की बौछार कर देते थे और उसके साथ ही बंटी की ठंड पता नहीं कहाँ उड़न–छू हो जाती थी।

बंटी कहता– ''वाह! सूरज दादा! मजा आ गया। ठंड में आप कितने सुखद लगते हो। आपसे दूर जाने का मन ही नहीं करता।''

सूरज दादा ने कहा– ''बेटा! तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुम्हें दूध पीना है और नाश्ता भी करना है। तैयार होकर शाला भी जाना है। मुझे भी तो सारा दिन

चलते रहना है। यहाँ खड़े रहना तुम्हें या मुझे थोड़े ही पसंद आएगा ?''

ऐसा करते-करते सर्दियों के दिन समाप्त हुए। गर्मियाँ प्रारंभ हुईं। अब बंटी को गर्मी लगने लगी।

उसने सूरज दादा से कहा- ''सूरज दादा! अब तो आप बहुत गरम लगते हो। क्या आप गुस्से में हो ?''

सूरज दादा हँस दिए और कहने लगे- ''ना बेटा! ना, तुम्हारे जैसे सुंदर और समझदार बच्चे पृथ्वी पर हों, फिर मैं क्यों गुस्सा करूँ ? पर जाड़ा गया और गर्मियाँ आईं तो मुझे गर्मी तो छोड़नी ही पड़ेगी ना ?''

जैसे-जैसे गर्मियों के दिन आगे बढ़ते गए, वैसे-वैसे गर्मी बढ़ती गई। असहाय गर्मी से सब त्रस्त हो गए। यह देखकर एक दिन बंटी ने सूरज दादा से पूछा- ''सूरज दादा! यदि आप इतनी तीखी गर्मी न बरसाओ तो क्या चल नहीं सकता ? देखिए ना, सारे लोग, पशु-पक्षी, कीट, पेड़-पौधे आपके ताप से कितने हैरान-परेशान हो रहे हैं। आप तो बहुत अच्छे-भले हो, फिर भी आपको इन सब पर दया नहीं आती ?''

सूरज दादा ने कहा- ''बेटा! तुम्हारी बात सही है, लेकिन यदि मैं दया करने लगूँगा तो कैसे चलेगा ? मैं गर्मी फैलाऊँगा तभी तो धान पकेगा। आम के पेड़ पर आम पकेगा। तुम्हें आम तो पसंद है ना ?''

बंटी ने कहा- ''मुझे तो आम बहुत पसंद है।''

''तो फिर ?''

सूरज दादा ने कहा- ''और मैं इतनी गर्मी छोड़ता हूँ, उसी से समुद्र का पानी गर्म होता है। उसका पानी भाप बनकर ऊपर आकाश में जाता है और आकाश में बादल बनते हैं। बादल बनेंगे तभी तो वर्षा होगी। बिना वर्षा के अनाज पैदा नहीं होता और आप सबको पानी मिलेगा नहीं। बोलो, मुझे तपना ही होगा न ?''

बंटी ने कहा- ''हाँ! सूरज दादा मैं समझ गया। आप भले ही गर्मी छोड़िए। कुछ समय हम सब सह

लेंगे। पर बाद में तो वर्षा में भीगने–नहाने का आनंद आएगा।''

गर्मियाँ बीत गई और वर्षाकाल आया। एक सुबह बंटी उठा, तब बिजली के कड़ाके और गर्जन–तर्जन के साथ बारिश हुई। बंटी बहुत प्रसन्न हुआ। सूरज दादा को सूचना देने के लिए वह खिड़की के पास दौड़ गया। लेकिन खिड़की के पास पहुँचते ही वह निराश हो गया। सूरज दादा कहीं दिखाई नहीं दिए। ऐसे खुशी के अवसर पर सूरज दादा कहाँ चले गए? उसकी आँखें भर आईं।

दूसरे दिन भी वर्षा हो रही थी। सूरज दादा दिखाई नहीं दिए। तीसरा दिन... इस प्रकार सात दिन तक सूरज दादा कहीं भी दिखाई नहीं दिए। बंटी रोज सुबह उठे और खिड़की के पास जाए, लेकिन सूरज दादा दिखाई ही नहीं दिए। इसलिए वह भारी मन से वापस लौट जाता था।

आठवें दिन बंटी खिड़की के पास गया और देखा सूरज दादा हाजिर।

उन्होंने कहा– ''सुप्रभातम्, बंटी!''

बंटी ने उत्तर नहीं दिया। वह रूठा हुआ था। सूरज दादा ने उसे बुलाया, तब वह रुआँसी आवाज में कहने लगा– ''आप इतने दिन कहाँ गए थे? कैसी मजेदार वर्षा हो रही थी। मुझे आपके सात बातें करनी थी, पर आप तो स्वयं ही गायब।''

सूरज दादा ने कहा– ''क्या करूँ बेटा? मैं बादलों की ओट में छिप जाऊँगा तभी तो वर्षा होगी। हमारे बीच करार हुआ है कि जब वर्षा हो, तब मुझे नहीं दिखाई देना है और जब मैं उपस्थित होऊँ तब वर्षा नहीं होगी। इसलिए मैं तुम्हें दिखाई नहीं देता था।''

बंटी ने कहा– ''ठीक है सूरज दादा! मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा।''

उसके बाद तो वर्षाकाल भी समाप्त हुआ। सूरज दादा प्रतिदिन नियमित आने लगे। फिर से बंटी और सूरज दादा रोज सुबह जी–भरकर बातें करने लगे।

– कर्जन (गुजरात)

बौद्धिक क्रीडा

भूल–भुलैया
झ से झण्डा

– चाँद मोहम्मद घोसी

आन–बान और शान से लहराते राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे के निकट जाकर अजय चौहान उसे सलामी देना चाहता है। प्रिय बच्चो! भूल–भुलैया के सही मार्ग से आप अजय को झण्डे तक पहुँचा दीजिए।

– नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी, जिला नागौर (राजस्थान)

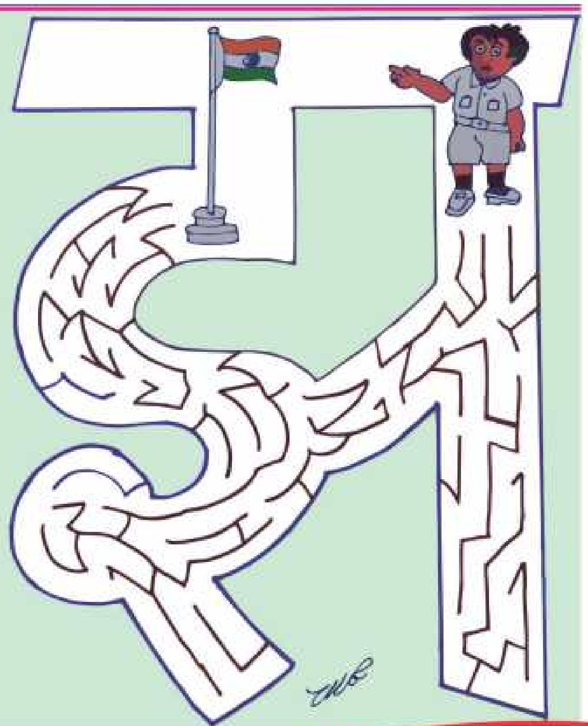

सरस्वती कुमार 'दीपक'
फिल्मों के गीतकार का बाल साहित्य को उपहार

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

सरस्वती कुमार 'दीपक' फिल्मों के अप्रतिम गीतकार थे। हिंदी के चर्चित गायकों के स्वर में सजे उनके सैकड़ों गीत आज भी जनमानस के कंठहार हैं। उन्होंने बाल साहित्य के क्षेत्र में भी अतुलनीय कार्य किया। उनके बाल गीतों, बाल गजलों और कव्वालियों की बाल साहित्य में खूब चर्चा हुई।

सरस्वती कुमार 'दीपक' का जन्म ७ जुलाई १९१८ को उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के नैथला ग्राम में हुआ था। बाल्यावस्था में ही साहित्यिक संस्कारों के कितने बीज उनके नन्हे से मस्तिष्क में प्रस्फुटित क्या हुए, आगे चलकर उनकी परिणति से सारा समाज लाभान्वित हुआ। दीपक जी ने जीविका के लिए मुंबई को अपनी कर्मस्थली बनाया। उन्होंने सौ से अधिक फिल्मों में भक्ति, दर्शन और कोमल प्रेम की मार्मिक अनुभूतियों से जुड़े सैकड़ों गीत लिखे जो खूब लोकप्रिय हुए।

बच्चों के प्रति भी उनके मन में बड़ा स्नेह था। वे बच्चो के चेहरों पर खिलखिलाहट देखना चाहते थे। उन्होंने बच्चों के लिए ऐसी कविताएँ लिखीं जिनमें मस्ती का खजाना हो। बच्चों को उन्हें पढ़ने में, सुनने में और सुनाने में भी खूब आनंद आए। वे सरल बाल साहित्य के पक्षधर थे। उनकी मान्यता थी कि लयहीन बाल कविताएँ दीर्घजीवी नहीं होतीं। बाल कविता जब गीति तत्व का हाथ थामती है तो बच्चों के होठों पर थिरकने का जादुई हुनर पा जाती है।

वे बच्चों के लिए नई विधाओं में लिखने के भी पक्षधर थे। बाल साहित्य प्रयोग चाहता है। उन्होंने बच्चों के लिए बहुत ही सुंदर गजलें लिखीं। उनकी रचनाएँ तत्कालीन प्रतिष्ठित बाल पत्रिकाओं में खूब छपी। सरस्वती कुमार दीपक जी की चर्चित बाल पुस्तकें हैं : नन्ही–मुन्नी गजलें, चुन्नु–मुन्नु, गाड़ियों का राजा, चोरी का फल, नकटा राजा, हाथी घोड़ा पालकी, बच्चों की कव्वालियाँ, जय जननी जय भारती। उनकी बाल कविताओं को एक स्थान पर सहेजने और समग्र के रूप में प्रकाशित किए जाने की आवश्यकता है।

८ जुलाई १९८६ को मुंबई में उनका निधन हो गया। उनके गीतों की अनुगूंज आज भी साहित्य के रसज्ञों के हृदय को झंकृत करती है।

आइए, पढ़ते हैं उनकी कुछ अनूठी बाल कविताएँ–

ओ परी

पास में आती नहीं क्यों, ओ परी?
दूर से दिखला रही जादूगरी।
इन परों को खोलकर, आ जा यहाँ,
जहाँ हम सब बात कहते हैं खरी।
हाथ में तेरे छड़ी, फिर भी वहाँ,
किसलिए तू देखकर हमको डरी?
हमें उड़ने का न कोई चाव है,
हम बजाते हैं मगन मन बाँसुरी।
साथ में जो खेलने को मन करे,
चली आ, मिट्टी यहाँ की भुरभुरी।
हम सभी मिलकर यहाँ हैं खेलते,
पैर में चुभती हमारे कंकरी।
अगर मिट्टी से तुझे भी प्यार है,
आ परी! अपनी यही कारीगरी।
आ परी! क्यों देर करती है, अरी!

धम्माधम

भोंदू तोंदू बैठे साथ,
बातें करते पकड़े हाथ।
थी छज्जे की चिकनी दीवार,
उस पर फिसले दोनों यार।
दोनों थे भारी–भरकम,
गिरे चौक में धम्माधम।

भँवरे की सीख

गा–गा कर भँवरा गुन गुन गुन,
कहता है 'बालक! सुन सुन सुन।'
तू उलझन को सुलझाता चल,
मत बिना बात की चादर बुन।
सब कलियाँ, फूल चुना करते,
तू डगर डगर के काँटे चुन।
झूठों का मुँह काला होता,
सच के होते हैं लाखों गुन।
चिड़ियों की तरह रह मगन सदा,
जो आतीं, गातीं चुनन चुनन।
तू नाच मोर बनकर प्यारे,
अपने पर फैला छुन छुन छुन।
आशा के गीत सुनाता चल,
सुन लहरों की मतवाली धुन।

चूहे चाचा बने चौधरी

चिड़िया चना उठाकर लाई
चींटी चली पिसाने नाजा।
पंजा चाटे बिल्ली मौसी
रोटी कौन पकाए आज?
चूहे चाचा बने चौधरी,
कहा नचाकर अपना हाथ–
'बस वह ही रोटी खा सकता
जिसने काम किया है साथ।'

भीगी बिल्ली

काँप रही थी भीगी बिल्ली,
बैठी बनकर थी सिलबिल्ली।
दाँत बजाती कट कट कट,
पंजे करती फट फट फट।
चूहे उड़ा रहे थे खिल्ली,
काँप रही थी भीगी बिल्ली।

गुड़ियाघर

कितना सुंदर, कितना प्यारा,
गुड़ियाघर, यह गुड़ियाघर।
इसमें रहती गुड़िया रानी,
इसमें रहते गुड्डे राजा,
गुड़िया कहती नई कहानी,
गुड्डा रोज बजाता बाजा।
मस्ती की बस्ती में खोए
रहते बनकर बेखबर!

घर के ऊपर छत नहीं है
और नहीं घर में दीवारें,
हँसती गुड़िया, कभी न रोई–
गुड्डा कब लाया तलवारें?
गुड़ियाघर की अजब कहानी–
इनको नहीं किसी का डर!

इतने सारे खेल–खिलौने,
रहते कब से साथ हैं,
इनके हैं सब ठाठ सलोने–
कोई नहीं अनाथ है!
हाय–हाय खाने–पीने की–
यहाँ कौन करता आकर?

गुड़ियाघर वाले कहते हैं–
'घर–घर में तुम खुशियाँ बाँटो'
जो पल–छिन हँसते रहते हैं–
साथ हँसो, सब बंधन काटो!
इस दुनिया को हमें बनाना–
गुड़ियाघर–सा, बढ़िया घर।

उड़ना मुझे सिखा दे पंछी

उड़ना मुझे सिखा दे पंछी,
दुनिया मुझे दिखा दे पंछी।
कैसे पर फैलाकर उड़ता
इसकी रीत बता दे पंछी।
अपने पंखों पर बिठला कर,
चंदा तक पहुँचा दे पंछी।
जहाँ ये मेघा तैर रहे हैं,
वहाँ की सैर करा दे पंछी!
मीठी बोली बोल-बोल कर,
आ जा, मन बहला दे पंछी!
कहाँ रात की रानी रहती,
इतना मुझे बता दे पंछी!
चंदा मामा की नगरी की,
डगरी तू दिखला दे पंछी!

चींटी का है कितना नाम

चींटी चाची भागी भागी,
करती सारे घर का काम।
कौवे काका काँव-काँव कर,
करते हैं छत पर आराम।
चींटी का है कितना नाम।
कौवा है कितना बदनाम।

गुणी राजा

चंदनपुर का बूढ़ा राजा,
सदा सुना करता था बाजा।
उसे सुहाती थी सारंगी,
खाया करता था नारंगी।

ताजी खबरें

चींटी से हाथी टकराया,
छत से ऊपर कूदा ऊँट।
मगरमच्छ मच्छर ने निगला,
चूहे भगे शहर को लूट।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

दुर्वासा मुनि का भोजन

– मोहनलाल जोशी

एक अत्यन्त तेजस्वी ऋषि थे। उनका नाम दुर्वासा था। उन्हें क्रोध बहुत आता था। दुर्योधन ने उन्हें कहा– ''वन में राजा युधिष्ठिर ऋषियों की बहुत आवभगत करते हैं।'' दुर्वासा मुनि युधिष्ठिर के पास आ गए। उन्होंने युधिष्ठिर से कहा– ''हमको भोजन करवाओ। आप तैयारी करो। हम नदी में स्नान करके आते हैं। हम बहुत भूखे हैं।''

युधिष्ठिर ने द्रौपदी से कहा। द्रौपदी ने अक्षय पात्र धो लिया था। वे भयभीत हो गए। अब वन में भोजन कहा से लाएँगे? तभी वहाँ पर कृष्ण भगवान आ गए। उन्होंने द्रौपदी से कहा– ''मुझे भूख लगी है।'' द्रौपदी ने धुला हुआ अक्षय पात्र दिखाया। उसमें एक चावल का दाना चिपका हुआ था। कृष्ण ने वह दाना खा लिया। उन्होंने कहा– ''आधे चावल से मेरा पेट भर गया। आधे चावल से संसार का पेट भर गया।''

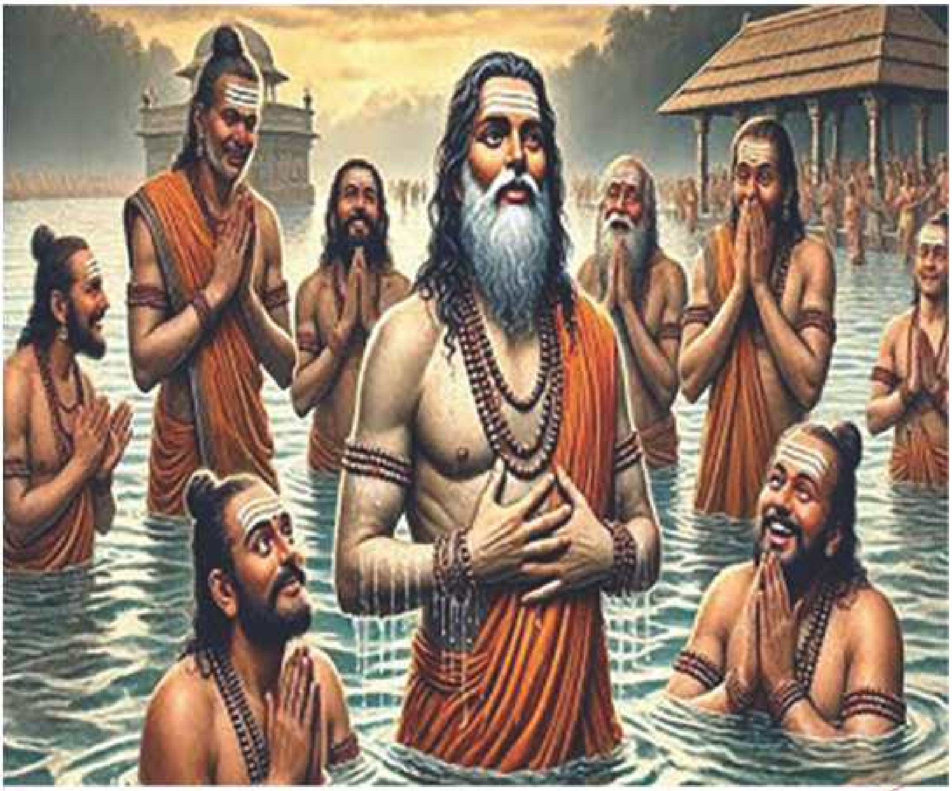

उधर दुर्वासा मुनि और ऋषियों का पेट भर गया। वे वहीं से चले गए। युधिष्ठिर जी शाप से बच गए।

ऋषियों द्वारा कथाएँ सुनाना

पाण्डव बारह वर्ष तक वन में रहे। धौम्य ऋषि उनके साथ थे। अनेक ब्राह्मण उनके साथ थे। भीम और अर्जुन हिंसक पशुओं का शिकार करते थे। सभी ब्राह्मणों की उन पशुओं से रक्षा करते थे।

पाण्डवों से मिलने के लिए कृष्ण भगवान आए। उन्होंने कुशल–क्षेम जाने। द्रौपदी ने कृष्ण को बहुत भला–बुरा कहा। कृष्ण ने कहा– ''जुए के समय मैं कहीं पर युद्ध करने चला गया था। मैं यहाँ होता तो तुम्हारा अपमान नहीं होने देता।''

युधिष्ठिरजी बहुत दु:खी थे। एक बार उन्हें एक ऋषि ने नल–दमयन्ती की कथा सुनाई। राजा नल भी जुए में सब कुछ हार गए थे। उन्हें जंगल में किसी का साथ नहीं मिला। राजा नल और दमयन्ती अकेले ही भटकते रहे। युधिष्ठिर के साथ तो पाँचों भाई, पत्नी और हजारों ब्राह्मण थे।

बाड़मेर (राजस्थान)

बादल और बच्चे

– कन्हैया साहू 'अमित'

''अरे देखो मित्रो! आज तो बादल की बारात आई है।'' शुभी की आवाज में वह चहक थी, जो महीनों से ठंडी हवा की बाट जोह रही थी।

''चलो, छतरी छोड़ो और चल पड़ो छप–छप करने।'' उसने मुँह बनाकर छाता झटक दिया, जैसे तो कोई खजाना हाथ लगा हो।

बरसाटोली गाँव, नाम बड़ा और दर्शन छोटे नहीं। यहाँ बादल आते हैं, तो जाने का नाम ही नहीं लेते।

लेकिन इस बार उल्टी गंगा बह रही थी। न बादल थे, न बूँदें, न बच्चों की धमाचौकड़ी। खेत ऐसे पड़े थे जैसे किसी ने कंबल ओढ़कर मुँह फेर लिया हो।

तालाबों में पानी नहीं, बस दरारें थीं। ये दरारें बिन बोले भी कह रही थीं– ''अब तो कोई बरसात का जतन करो, वरना हमसे उम्मीद मत रखो।''

बच्चे भी मुरझाए हुए फूल जैसे थे। लेकिन जैसे ही महीनों प्रतीक्षा के बाद आज सुबह पहली बूँदें टप–टप टपकीं, शुभी की आँखें चमक उठीं।

''ओ शानू, मोंटी, नील! बाहर आओ ना! देखो–देखो बादल भैया पूरी बारात के साथ पधारे हैं।'' वह चीखते हुए दौड़ी।

नील बाहर आते ही बोला– ''अरे! माँ ने कहा था कीचड़ में न जाना। पर अब तो मन का मयूर पंख फैला चुका है।''

शानू ने ठहाका लगाया– ''अब तो कोई भी, कितना भी चाहे तो भी हमको अंदर नहीं रोक सकता।''

चारों बच्चे वर्षा के पानी में ऐसे कूदे जैसे मुक्त हँसी किसी गंभीर सभा में घुस पड़ी हो। कीचड़ उछल रही थी, पानी उबल रहा था और हँसी वो तो जैसे गूँज बनकर आसमान तक जा रही थी।

तभी समाने से चैतू चाचा दिखे। सिर पर गमछा, हाथ में लकड़ी का हल और बैल पीछे–पीछे ऐसे चल रहे थे जैसे शादी के बाद बाराती सुस्ताए हुए लौटते हैं।

शानू चिल्लाया– ''चाचा! आज तो खेतों में नाव चलानी पड़ेगी।''

चाचा मुस्कराए– ''अरे बेटा! अबकी तो पानी देखकर खेतों की आत्मा भी तृप्त हो जाएगी। सूखे ने तो जैसे सबकी कमर ही तोड़ दी थी।''

मोंटी ने चुटकी ली– ''मतलब चाचा! सूखा गया और मुस्कान आई।''

नील बोला– ''हाँ! और अब वर्षा देख खेत भी कह रहे होंगे, 'अब आई है हमारी याद'।''

चारों बच्चे हँसते–हँसते गड्ढों में गिरते–पड़ते झूम रहे थे।

इसी बीच, ऊपर से एक अजीब–सी आवाज आई। ''हूँ...हूँ...हूहू...।''

सबकी गर्दनें एक साथ उठीं। आकाश में बादलों का एक गोल–मटोल टुकड़ा उदासी में लिपटा था। उसका चेहरा वैसे ही लटका था जैसे किसी बच्चे का जब उसका चॉकलेट गिर जाए।

शुभी ने भोलेपन से पूछा– ''क्या हुआ बादल भैया? आपके चेहरे पर तो बरसात से अधिक मायूसी है।''

उसी समय एक घूमता–घामता बड़बोला बवंडर वहाँ आ गया। आँखें नचाते हुए बोला– ''अरे! ये इसलिए उदास हैं क्योंकि लोग कहते हैं जो गरजते हैं, वो बरसते नहीं। सब इनका उपहास उड़ाते हैं।''

बादल ने भारी आवाज में कहा– ''सच में... लोग मेरी चेतावनी को हल्के में लेते हैं। समझते हैं कि मैं केवल शोर मचाता हूँ, जबकि मैं सचेत करता हूँ। सजग हो जाओ। 'सहेज लो जल, नहीं तो फिर रोओगे कल, बिना जल'।''

शुभी थोड़ा गंभीर हो गई। बोली– ''भैया! गरजना कोई दिखाता नहीं। आप तो वे बड़े हैं जो डाँट कर भी दुलार करते हैं।''

नील ने भी अपनी जेब से पिचकारी निकालकर कहा– ''हम तो आपको वर्ष भर स्मरण करते हैं। आप न हो तो हम अपनी पिचकारी से भी क्या खेलें?''

मोंटी बोला– ''आप ही हैं जो नदियों को नाचना सिखाते हैं, खेतों को हरियाली का हार पहनाते हैं।''

शानू ने तो मजाकिया अंदाज में जोड़ दिया– ''जब आप नहीं आते, तो माँ बिन खीर बनाए ही हमें डाँट देती हैं, 'इतना पानी क्यों बर्बाद किया' आप होते तो नहाने के बहाने सब माफ हो जाता है।''

बादल मुस्कराने लगा। उसकी आँखों से आँसू अब मोती की बूँदों में बदलने लगे थे।

शुभी ने हथेलियाँ जोड़ते हुए कहा– ''अब तो मुस्कुराइए बादल भैया! और जमकर नीर बरसाइए।''

चारों बच्चों ने मिलकर हाथ जोड़ लिए, जैसे प्रार्थना कर रहे हों। बादल थोड़ी देर चुप रहा। फिर जोर से गरजा, ''धड़ धड़ धड़!''

और फिर... जैसे किसी ने आसमान से टोंटी खोल दी हो! वर्षा झमाझम होने लगी।

चैतू चाचा ने दूर से देखकर कहा– ''लो बच्चो! अब तो खेत स्वयं ही नाचने लगेंगे।''

बच्चे भी बोले– ''आज तो आसमान ने भी खुशियों का खजाना खोल दिया।''

– लमती (छत्तीसगढ़)

नवयुग के भविष्य

– अनुराधा तिवारी 'अनु'

प्यारे बच्चो ! सदा रहो खुश
कहती भारत माता।
नवयुग के तुम ही भविष्य हो
भारत भाग्य विधाता।।

नन्हीं–मुन्नी मुट्ठी में है
किस्मत बंद तुम्हारी।
अपनी मेहनत से जीतोगे
इक दिन दुनिया सारी।।

ऋषि–मुनियों की संतानें हो
वेद–शास्त्र के ज्ञाता।
नवयुग के तुम ही भविष्य हो
भारत भाग्य विधाता।।१।।

तुम खुशियों की फुलवारी हो
जो आँगन महकाए।
चेहरे पर मुस्कानें ला दे
सब दुख–दर्द मिटाए।।

नन्हीं किलकारी से मेरा
जीवन है मुस्काता।
नवयुग के तुम ही भविष्य हो
भारत भाग्य विधाता।।२।।

सच्चाई के पथ पर चलना
मेहनत से न डरना।
पग–पग पर काँटे बिखरे हैं
सँभल–सँभल पग धरना।।

ध्यान लक्ष्य पर जो रखता है
वही सफलता पाता।
नवयुग के तुम ही भविष्य हो
भारत भाग्य विधाता।।३।।

भाषा, पंथ, जाति से ऊपर
मानवता को चुनना।
कोई कितना भी बहकावे
अपने दिल की सुनना।।

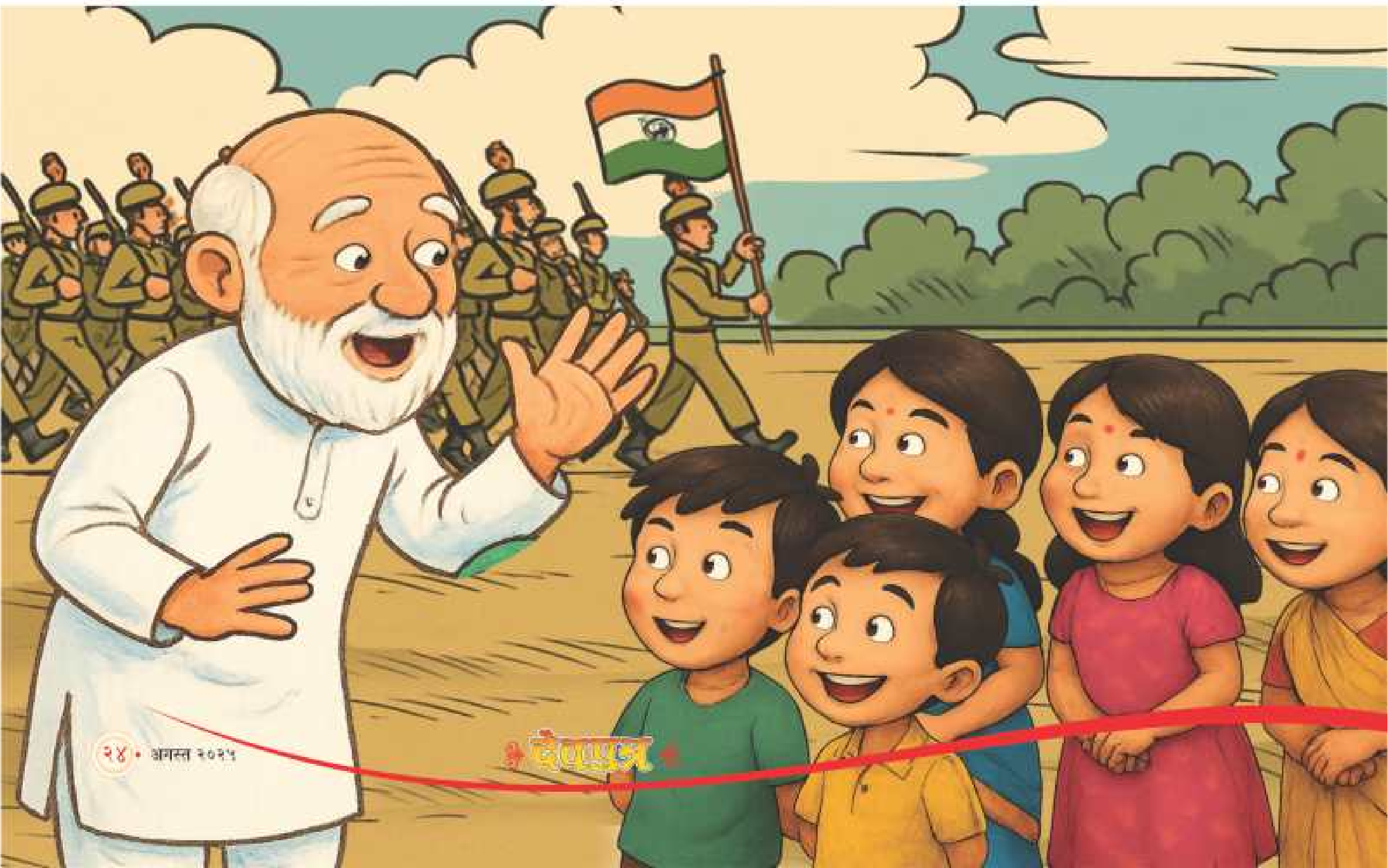

सदा बनाए रखना प्यारे!
मानवता से नाता।
नवयुग के तुम ही भविष्य हो
भारत भाग्य विधाता।।४।।

वीरों के बलिदान त्याग से
मिली तुम्हें आजादी।
इसे सुरक्षित रखना तुमको
ध्येय रहे फौलादी।।

लहर-लहर लहराए तिरंगा
जन-गण-मन सुखदाता।
नवयुग के तुम ही भविष्य हो
भारत भाग्य विधाता।।५।।

दीन-दुखी निबलों, विकलों की
तुम ताकत बन जाना।
आपस में सद्भाव प्रेम की
निर्मल गंग बहाना।।

शुभ-आशीष तुम्हें है बच्चो!
बनो विश्व-निर्माता।
नवयुग के तुम ही भविष्य हो
भारत भाग्य विधाता।।६।।

प्यारे बच्चो! सदा रहो खुश
कहती भारत माता।
नवयुग के तुम ही भविष्य हो
भारत भाग्य विधाता।।

– छिंदवाड़ा (म. प्र.)

कविता

हम सकते क्या भूल कभी?

– अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

हमने कष्ट सहे हैं अनगिन
आजादी है मिली तभी,
वीरों की कुर्बानी बोलो
हम सकते क्या भूल कभी?

भारत के ध्वज, संविधान का
मान बढ़ाते मिल जुलकर,
आतंकी, अरि देशों को पर,
सबक सिखाते हैं खुलकर।

लेकिन सत्य-अहिंसा का पथ
हमको अतिशय प्यारा है,
देश अजी गांधी-गौतम का
जब में सबसे न्यारा है।

हम अपना गौरवशाली-
इतिहास भूल सकते कैसे?
भारत के बच्चे हैं कल के
राणा और शिवा जैसे।

गर्व हमें होता अतीत पर
और भविष्य पर नाज है,
हर बच्ची में रानी लक्ष्मी-
की छवि दिखती आज है।

– सागरपाली (उ. प्र.)

श्री गणेश को दूब क्यों पसंद है?

चित्रांकन एवं प्रस्तुति- *संकेत*

एक दिन जब महान ऋषि कौंडियन दूब के गुच्छे के साथ आश्रम लौटे-

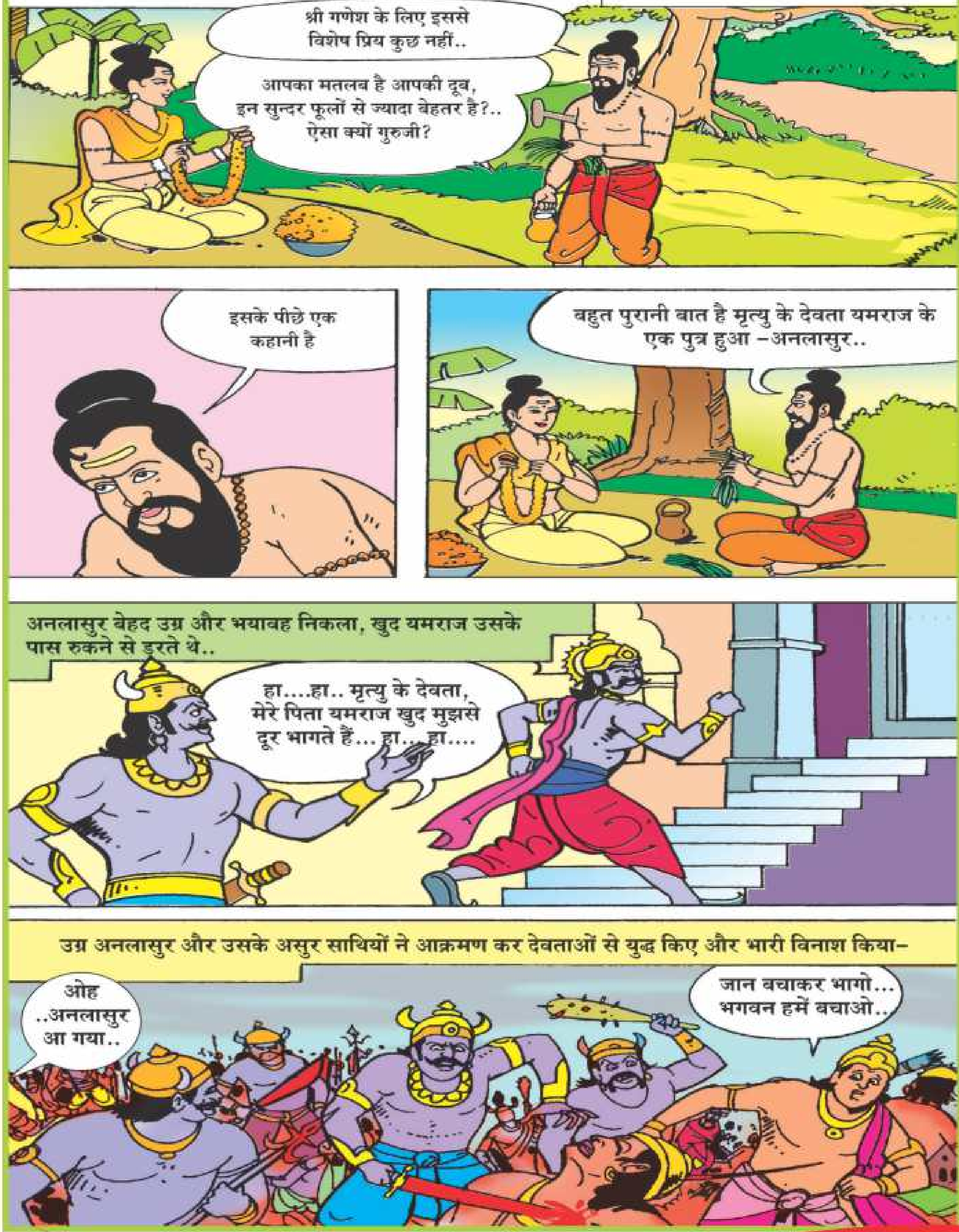

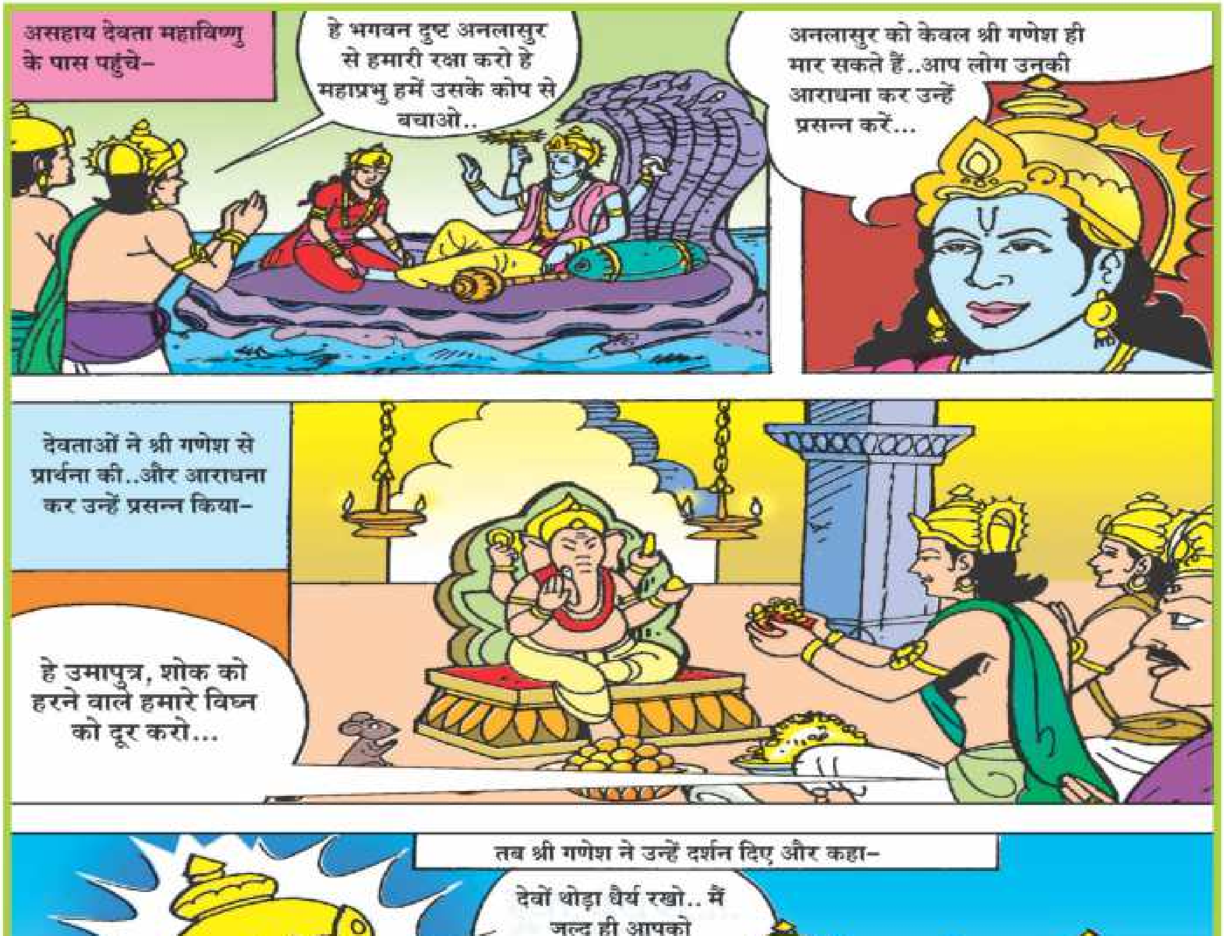
असहाय देवता महाविष्णु के पास पहुंचे–
हे भगवन दुष्ट अनलासुर से हमारी रक्षा करो हे महाप्रभु हमें उसके कोप से बचाओ..
अनलासुर को केवल श्री गणेश ही मार सकते हैं..आप लोग उनकी आराधना कर उन्हें प्रसन्न करें...
देवताओं ने श्री गणेश से प्रार्थना की..और आराधना कर उन्हें प्रसन्न किया–
हे उमापुत्र, शोक को हरने वाले हमारे विघ्न को दूर करो...
तब श्री गणेश ने उन्हें दर्शन दिए और कहा–
देवों थोड़ा धैर्य रखो.. मैं जल्द ही आपको अनलासुर के अत्याचार से मुक्त कराऊंगा..तब तक आप लोग मेरे साथ ही रहिए...
उधर अनलासुर बचे हुए देवताओं को मारने के लिए आतुर था–
अरे यहां भी कोई नहीं... आखिर सारे देवता कहां जाकर छिप गए हैं?
जाओ और हर जगह ढूंढ़ो ..कोई देवता जिंदा नहीं बचना चाहिए.....

बहुत खोज के बाद अनलासुर को बचे हुए सभी देवता श्री गणेश के साथ मिले..
ओह! तो तुम सब यहां हो? चलो ठीक ही है सबको एक साथ समाप्त करने में आसानी रहेगी.... उसके बाद मैं सभी लोकों का स्वामी हो जाऊंगा..
यह सुनकर श्री गणेश को तेज हंसी आई–
हा.. हा... हा...
अरे हाथी के सिर वाले तू क्यों हंस रहा है?..
अनलासुर तुमने सभी लोक देखे और उन्हें जीतने की कोशिश की... पर क्या तुमने खुद मेरे पेट में मौजूद लोक देखें भी हैं?
दिखाओ मुझे कौनसे लोक हैं तुम्हारे अंदर?
जैसे ही श्री गणेश ने अपना मुंह खोला..
अनलासुर के उसमें प्रवेश करते ही श्री गणेश उसे निगल गए...
पर अनलासुर की गर्मी से केवल श्री गणेश के पेट में ही नहीं...
.. पूरी सृष्टि में भयानक गर्मी भड़क उठी...

सारा तेज ताप पचाने से श्री गणेश बीमार हो गए–
ओह! अनलासुर की गर्मी सहन नहीं हो रही..
इन्हें आराम मिले, ऐसा क्या करें?
लगातार गुलाब जल और चंदन के लेप से भी श्री गणेश को कोई लाभ नहीं हुआ....उनका ताप बना ही रहा...
अंत में महान ऋषियों ने उन्हें दूब में लपेट दिया जिससे श्री गणेश को बड़ी राहत मिली–
ओह क्या आराम है, अब मुझे राहत मिली है..
तब श्री गणेश ने कहा –
जो मुझे आराधना से प्रसन्न करना चाहे वह दूब की इक्कीस शिखाएं मुझे अर्पित करे.
समझीं, बस तभी से दूब श्री गणेश की पसंद बनी, जिसे उन्हें अर्पित करना शुभकारी माना जाता हैं
समाप्त

भोजन के बाद

– डॉ. मनोहर भण्डारी

(गत अंक से आगे)

हमिंग और बेकनिंग फूड– जिस भोजन की शरीर को आवश्यकता होती है अर्थात् शरीर जिस भोजन को खाने के लिए इच्छुक होता है, उसे क्लिनिकली साइकोलॉजिस्ट **डॉ. लियोनार्ड पियर्सन** ने हमिंग फूड अर्थात् गुनगुनाने वाला भोजन कहा है। इसे अधिक मात्रा में नहीं खाया जा सकता है। यह भोजन हमें संतुष्टि देता है। जबकि जो भोजन दिखाई देने पर खाने की इच्छा जगा दें, जिसकी शरीर को मूलतः आवश्यकता नहीं है, ऐसा भोजन बेकनिंग फूड कहलाता है। इन दिनों विज्ञापनों की भरमार के कारण हम सब उन वस्तुओं को खाने लगे हैं, जिनकी शरीर को आवश्यकता ही नहीं है। ऐसे भोज्य पदार्थों को खाते चले जाओ तो भी तृप्ति नहीं होती है। ऐसे भोज्य पदार्थ शरीर को रोगी बना देते हैं। फास्टफूड, डिब्बाबंद फूड, कोल्डड्रिंक, चिप्स, पिज्जा, बर्गर, बेकरी के पदार्थ, मिठाइयाँ, नमकीन, समोसा, कचोरी, भजिए आदि इसी श्रेणी में आते हैं। इनमें से अधिकाँश खाद्य एसिडिक भोजन की श्रेणी में आते हैं। अचार, पापड़, चटनी, तले हुए पदार्थ, आलू, मैदे के व्यंजन, केक, पेस्ट्री, माँस, अधिक मसालेदार खाद्य, अधिक नमक युक्त खाद्य आदि का सेवन कभी–कभार ही करें।

विश्राम और झपकी– भोजन करने के बाद १० मिनिट तक बाईं करवट (वामकुक्षी) लेटें। इससे दाहिना (सूर्य) स्वर सक्रिय हो जाता है। दाहिने स्वर को सिम्पेथेटिक तंत्रिका तंत्र से सम्बद्ध माना जाता है। विश्राम करने से समुचित पाचनक्रिया के लिए पाचन तंत्र में अधिक रक्तसंचार सम्भव होता है। इसे चिकित्सा विज्ञान की भाषा में रिडिस्ट्रीब्यूशन ऑफ ब्लड कहा जाता है। वैज्ञानिकों के अनुसार झपकी से विश्राम के साथ–साथ थकान कम होती है, सतर्कता और स्मरण शक्ति बढ़ती है और मूड में सुधार होता है।

शाम का भोजन– सूर्यास्त के पहले करें और भोजन के बाद १०–१५ मिनिट अवश्य टहलें। शाम के भोजन में छिलके वाली मूँग की दाल, दलिया, खिचड़ी, सलाद आदि का प्रयोग हितकर होता है। रात्रि भोजन से कैंसर की सम्भावना बहुत बढ़ जाती है। **द डेंजर्स ऑफ इटिंग लेट एट नाइट** नामक अपने शोध आलेख में **डॉ. जेमी ए. कौफमैन** ने लिखा है कि रात्रि भोजन से एसिड रिफ्लक्स नामक बीमारी हो जाती है, जिससे अन्नवाहिनी (इसोफेगस) के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। उन्होंने **कौफमैन्स एसिड रिफ्लक्स डाइट** नामक पुस्तक भी लिखी है। जर्नल ऑफ इपिडेमियोलॉजी, बायो मार्कर्स एण्ड प्रिवेंशन के अनुसार रात्रि भोजन में मधुमेह और स्तन कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन के

ताजा अध्ययन के अनुसार रात्रि भोजन से मधुमेह और कैंसर हो सकता है।

घर का भोजन, सर्वश्रेष्ठ भोजन– जहाँ तक हो सकें घर का बना भोजन ही करें। क्योंकि बाहर खाना खाने वालों में से ८०% लोग यह जानना ही नहीं चाहते हैं कि वे जो खा रहे हैं, उसके अवयव (इन्ग्रेडियेन्ट्स) क्या हैं। अनेकानेक कारणों से होटलों का भोजन स्वास्थ्य और स्वच्छता की दृष्टि से नुकसानदायक होता है।

माँसाहार कदापि न करें– मानव शरीर का पाचन संस्थान शाकाहारी भोजन के अनुकूल बना है। माँसाहार से कैंसर, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप आदि रोग हो सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार माँसाहार से अनेक प्रकार के रोग हो सकते हैं। सबसे बड़ा नकारात्मक प्रभाव हमारी मानसिकता पर पड़ता है।

दिनभर चुगते ना रहें– जो लोग दिनभर कुछ न कुछ खाते रहते हैं, वे पाचन संस्थान की कार्यप्रणाली के सबसे बड़े शत्रु होते हैं। वे बीमारियों और मोटापे से बच नहीं पाते हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

कविता

झूमे बहना भाई

– डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

कौवा भाई ने कोयल से
जब राखी बँधवाई।
मैना मौसी ने रिश्तों की
सच्ची बात बताई।
भाई–बहन का अनुपम रिश्ता
होता है अति पावन।
झूम–झूम हर वर्ष सिखाता
बरस–बरस कर सावन।
हर संकट में साथ निभाना
करना नहीं लड़ाई।
बोली बहना भूल न जाना
चाहे कितनी दूर रहूँ।
साथ निभाऊँगी भैया! मैं
कितनी भी मजबूर रहूँ।
राखी बाँध रही भैया को
खिला रही मिठाई।
बहन कोयलिया की बातें–
सुन भैया का जी भर आया।
किया दुलार भाई कौवा ने
मौसी का मन हर्षाया।
बादल हरषें, बूँदें बरसें
झूमें बहना भाई।

– कटनी (म. प्र.)

सुरभि की सीख

– दीनदयाल शर्मा

आठ वर्षीया सुरभि चौथी कक्षा में पढ़ती है। घर में कुछ भी गलत दिखे तो वह झट से टोक देती है। स्वयं से चार वर्ष बड़े भैया मनीष को वह बात–बात पर टोकती है, लेकिन मनीष भी कम नहीं है। टोकने के बाद भी वह अपनी आदत नहीं बदलता।

हमेशा की तरह कमरे में आज भी टीवी चल रहा था। सुरभि वहीं बैठी अपना पढ़ाई का गृहकार्य कर रही थी और बीच–बीच में टीवी भी देख रही थी। तभी मनीष घर में आया और अपने कमरे की तरफ जाने लगा तो सुरभि ने टोका– ''मनीष भैया! पहले हाथ धो लो, बाहर से आए हो।''

मनीष ने अपने हाथ दिखाते हुए कहा– ''क्या लगा है मेरे हाथों में ? यह देखो, कुछ भी तो नहीं है।''

''चल, पहले हाथ धो ले और सैनेटाइज भी कर ले।'' सुरभि बुजुर्ग अंदाज में बोली।

''क्यों ? बाहर कोरोना फैल रहा है क्या ? बार–बार टोका मत कर मुझे। समझी ?''

''हाथ धो ले बेटा! सुरभि ठीक ही तो कह रही है।'' उसकी माँ ने रसोई में काम करते हुए कहा।

''माँ! आप भी हमेशा सुरभि का ही पक्ष लेती हो।''

''इसमें पक्ष लेने वाली कौनसी बात है बेटा! तुम घर से बाहर होते हो तो कितनी चीजों को हाथ लगाते हो। हाथ धोने में क्या जाता है ? सुरभि तो हम सबके भले के लिए ही कह रही है।'' माँ बोली।

हाथ धोते–धोते मनीष बोला– ''मुझ बार–बार क्यों टोकती है ये ? मेरी दादी है क्या ?''

''हाँ, दादी हूँ, अब बोल।''

''माँ! रोक लो इस कालती को। नहीं तो पिटाई कर दूँगा इसकी।''

''बता, अब बोलेगा कालती ?'' मनीष की पीठ पर पैन चुभोते हुए सुरभि क्रोधित होकर बोली।

''माँ! समझा लो अपनी वकील को, वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।'' चिल्लाते हुए मनीष ने कहा।

''सारा दिन लड़ते रहोगे दोनों! घर में घुसते ही झगड़ा। छोटी बहन को कभी लाड़ भी कर लिया कर। चल अपने कमरे में चल।'' माँ रसोई से बाहर आते हुए बोली।

''लाड़! और इससे ? काली–कलूटी कहीं की।''

''अरे काली–कलूटी मत बोल गोरैया।'' सुरभि गुस्से से बोली।

''सारा दिन दादी बनी रहती है। मेरा सम्मान ही नहीं करती। देख लिया कर, बड़ा हूँ तुझसे।''

''कितना बड़ा है ? बात करने का तो ढंग नहीं है। सम्मान और करूँ!''

''चुप हो जा अब।'' सुरभि की तरफ आँखें तरेरते हुए मनीष अपने कमरे की ओर जाने लगा।

''जूते उतार ले पहले। सीधा ही कहाँ जा रहा है कमरे में ?''

''ये ले दादी!'' दोनों जूतों को इधर–उधर फेंकते हुए मनीष बोला।

''देख लो माँ! अपने लाड़ले के लच्छण देख लो। फिर कहता है बड़ा हूँ। जूते इस तरह फेंक रहा है। एक कहीं और दूसरा कहीं। इसको कोई कुछ नहीं कहता। बेटा है न। कोई नहीं डाँटता इसको।''

''तू है ना डाँटनेवाली। किसी को बोलने ही नहीं देती। सारा दिन बक–बक–बक–बक। अपना गृहकार्य पूरा कर। खाना–खा और सो जा चुपचाप।''

''क्यों सोऊँ चुपचाप ? तू सो जा चुपचाप।'' अपना गृहकार्य करते हुए सुरभि बोली।

एक दिन मनीष जोर–जोर से चीखता–चिल्लाता घर आया। ''माँ–माँ, हाय रे माँ! मेरे मुँह में मधुमक्खी खा गई।''

''मुँह में मधुमक्खी!'' माँ अपने कमरे से दौड़ती

हुई मनीष के पास आई और घबराती-सी बोलीं- ''मुँह खोल तो अपना।''

''ओह रे माँ! बहुत दर्द हो रहा है।'' कहते हुए मनीष ने अपना मुँह खोला।

मुँह के भीतर झाँकती हुई माँ बोली- ''तालू में खाई लगती है, लाल-लाल हो रहा है।''

''हाँ माँ! तालू में ही खाई है। ओह रे! मैं मर गया रे।'' सुबकते हुए मनीष बोला।

तभी शाला की बस से उतरकर सुरभि घर आई। उसने मनीष को कराहते हुए देख पूछा- ''क्या हुआ? रो क्यों रहा है?''

''इसके तालू में मधुमक्खी खा गई।'' मनीष की माँ बोली।

''तालू में मधुमक्खी!'' विस्मय करती हुई सुरभि ने झट से जूते उतारे। वॉशबेसिन में हाथ धोए और मेडिकल बॉक्स लाते हुए बोली- ''माँ भैया! को एविल की गोली दे दो।'' मनीष ने मेडिकल बॉक्स से एक गोली निकाली।

तभी सुरभि पानी लेकर आ गई और बोली- ''लो भैया पानी। जल्दी से गोली ले लो। दर्द कम हो जाएगा। मुँह में सूजन भी नहीं आएगी।''

''देखा मनीष! सुरभि कितना ध्यान रखती है तेरा। ये है बहन का प्यार।'' माँ बहुत ही स्नेह से बोली।

''माँ मेरे तालू में बहुत दर्द हो रहा है। माँ सुनो तो!'' मनीष जोर से चीखते हुए बोला।

''मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है कि मधुमक्खी तालू तक पहुँची कैसे! मैं तो ये पहली बार देख रही हूँ, कि मुँह के भीतर तालू में मधुमक्खी खा गई है।'' माँ अचंभा करती हुईं बोलीं।

''मेरा गला रुक रहा है माँ! ओह रे! मर गया रे! माँ मैं अब खाना कैसे खाऊँगा?'' मनीष रोता हुआ-सा बोला।

''तो रो क्यों रहा है? ठीक हो जाएगा। अभी

एविल ली है, इससे दर्द भी कम होगा और मुँह में सूजन भी नहीं आएगी। लेकिन एक बात बता। मधुमक्खी तेरे मुँह में पहुँची कैसे?'' माँ ने आश्चर्य से पूछा।

''क्या पता माँ! मेरे तो स्वयं समझ नहीं आ रहा है।'' मनीष तिरछी नजर से सुरभि की ओर देखते हुए बोला।

''समझ क्यों नहीं आ रहा है, मैं बताती हूँ।'' सुरभि अपनी कमर पर हाथ रखते हुए बोली।

''क्या बताएगी तू। तू मेरे साथ थी क्या, जो बता देगी। या तू भगवान है, जिसे पता होगा कि मुझे मधुमक्खी कैसे खा गई।''

''हाँ, भगवान ही हूँ मैं। मुझे पता है कि तुझे उबासी आई और जानवरों की ओर अपना मुँह खोल दिया। मुँह के आगे हाथ भी नहीं किया। तभी मधुमक्खियों का झुण्ड आया और उसमें से एक मधुमक्खी तुम्हारे मुँह में घुस गई। बोल, यही हुआ था न? मैं तेरी आदत अच्छी तरह जानती हूँ। चुप क्यों है, बोल बच्चू! मैं सही कह रही हूँ न?'' सुरभि हाथ नचाते हुए बोली।

''हाँ बहन! तू सही कह रही है। तू मेरी दादी ही नहीं, जासूस भी है। ये सच है कि मुझे उबासी आई थी और मैंने मुँह के आगे हाथ भी नहीं किया। बस मेरी इसी गलती के कारण मैं मधुमक्खी का शिकार हो गया।'' मनीष आँखें झुकाते हुए बोला।

''हुर्रे!!!!'' कहती हुई सुरभि ने मनीष को अपनी बाहों में भर लिया।

- हनुमानगढ़ (राजस्थान)

रक्षाबंधन के अर्थ

– प्रियंका सौरभ

राजा बलि को रक्षाबंधन करते हुए लक्ष्मी जी

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम प्रमुख त्योहारों में से एक है। राखी के त्योहार का अर्थ केवल बहन की दूसरों से रक्षा करना ही नहीं होता है बल्कि उसके अधिकारों और सपनों की रक्षा करना भी भाई का कर्त्तव्य होता है, किन्तु क्या सही अर्थों में बहन की रक्षा हो पाती है। आज के समय में राखी के दायित्वों की रक्षा करना बहुत आवश्यक हो गया है। यदि इस पवित्र दिन अपनी बहन के साथ संसार की हर लड़की की रक्षा का वचन लिया जाए तो सही अर्थों में इस त्योहार का उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा।

भाई–बहन का संबंध संसार के सभी संबंधों में सबसे ऊपर है। भाई–बहन संसार के सच्चे मित्र और एक–दूसरे के मार्गदर्शक होते हैं। जब बहन शादी करके ससुराल चली जाती है या भाई नौकरी के लिए किसी दूसरे शहर चला जाता है। तब अनुभव होता है कि भाई–बहन का ये नाता कितना अनमोल है। सीमा पर खड़ा एक सैनिक भाई अपनी बहन को कितना याद करता है और बहनों की ऐसे समय क्या दशा होती है इसके लिए शब्द नहीं है। राखी के रंग–बिरंगे धागे से बंधा ये पवित्र बंधन सदियों से हमारी संस्कृति से जुड़ा है। यह पर्व उस अनमोल प्रेम का, भावनाओं का बंधन है जो भाई को केवल अपनी बहन की नहीं बल्कि संसार की हर लड़की की रक्षा करने हेतु वचनबद्ध करता है। भाई–बहन के आपसी अपनत्व, स्नेह और कर्त्तव्य बंधन से जुड़ा त्योहार भाई–बहन के संबंध में नवीन ऊर्जा और दृढ़ता का प्रवाह करता है। बहनें इस दिन बहुत ही उत्साह के साथ अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधने के लिए आतुर रहती हैं। यह त्योहार बहन के लिए भाई के प्रति स्नेह को दर्शाता है और भाई को उसके कर्त्तव्यों का बोध भी कराता है।

रक्षाबंधन भाई–बहन का त्योहार है, रक्षा का अर्थ सुरक्षा और बंधन का अर्थ है वचनबद्धता। रक्षाबंधन के दिन बहनें भगवान से अपने भाइयों की उन्नति के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। राखी सामान्यत: बहनें भाई को ही बाँधती हैं परन्तु ब्राह्मणों, गुरुओं और परिवार में छोटी लड़कियों द्वारा सम्मानित संबंधियों (जैसे पुत्री द्वारा पिता को) भी बाँधी जाती है। वास्तव में ये त्योहार रक्षा के संकल्प के साथ जुड़ा हुआ है। जो किसी की भी रक्षा करने को प्रतिबद्ध करता है।

इस पावन त्योहार का अपना एक अलग स्वर्णिम इतिहास है, लेकिन बदलते समय के साथ बाकी संबंधों की तरह इसमें भी बहुत से बदलाव आए हैं। जैसे–जैसे आधुनिकता हमारे मूल्यों और संबंधों पर हावी होती जा रही है। संस्कृति में पतन के फलस्वरूप संबंधों की दृढ़ता और प्रेम की जगह दिखावे ने ले ली है। आज के बदलते समय में इस त्योहार पर भी आधुनिकता हावी होने लगी है, तब से आज तक यह परंपरा तो चली आ रही है लेकिन कहीं न कहीं हम अपने मूल्यों को खोते जा रहे हैं।

राखी के रंग–बिरंगे धागों में अब अपनत्व की भावना और प्रेम की ऊष्मा कम होने लगी है। एक

समय में जिस तरह की मान्यता और संवेदना राखी को लेकर थी शायद अब उनमें रुपयों के नाम की दीमक लगने लगी है। संबंधों में प्रेम की जगह पैसे लेने लगे हैं। ऐसे में संस्कृति और मूल्यों को बचाने के लिए आज बहुत आवश्यकता है दायित्वों से बंधी राखी का सम्मान करने की। क्योंकि राखी का ये अनमोल बंधन केवल कच्चे धागों की परंपरा भर नहीं है। स्नेह और संबंध अनमोल होते हैं। जहाँ लेन-देन की परंपरा होती है वहाँ स्नेह तो टिक ही नहीं सकता।

पुराणों में रक्षा बंधन की कई कथाएँ हैं सर्व प्रथम देवराज इंद्र को उनकी पत्नी शची ने वृत्रासुर से युद्ध में विजय के लिए रक्षासूत्र बाँधा था। इसी प्रकार भगवान वामन द्वारा राजा बलि को पाताल में भेज देने के बाद विष्णु भगवान से ही प्राप्त वरदान स्वरूप जब वे बलि के द्वारपाल बन गए थे तब उन्हें मुक्त कराने के लिए लक्ष्मी जी ने राजा बलि को रक्षासूत्र बाँधा था।

जब श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई। द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी अँगुली पर पट्टी बाँध दी। यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था। कृष्ण ने इस उपकार का बदला बाद में चीरहरण के समय उनकी साड़ी को बढ़ाकर चुकाया। कहते हैं परस्पर एक-दूसरे की रक्षा और सहयोग की भावना रक्षाबंधन के पर्व में यहीं से प्रारम्भ हुई।

पहले खतरों के बीच फँसी बहन जब भी भाई को पुकारती थी, तो संसार की हर ताकत से लड़कर भी भाई उसे सुरक्षा देने दौड़ पड़ता था और उसकी राखी का मान रखता था। आज एक बार फिर भातृत्व के कर्त्तव्यों को बहनें फिर चुनौती दे रही हैं, क्योंकि उसकी आयु का हर पड़ाव असुरक्षित होता जा रहा है। उसके शील एवं अस्मिता को बार-बार नोचा जा रहा है।

मेरा मानना है कि राखी के इस परम पावन पर्व पर भाइयों को निष्ठापूर्वक पुन: अपनी बहन की ही नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत की सुरक्षा और सम्मान करने की, शपथ लेने की विशेष आवश्यकता है। तभी ये राखी का पावन पर्व सार्थक बनेगा और भाई-बहन का संबंध धरती पर शाश्वत रह पाएगा।

यह पर्व भारतीय समाज में इतनी व्यापकता और गहराई से समाया हुआ है कि इसका सामाजिक महत्व तो है ही, धर्म, पुराण, इतिहास, साहित्य और फिल्में भी इससे अछूते नहीं है। रक्षाबंधन पर्व सामाजिक और पारिवारिक एकबद्धता या एकसूत्रता का सांस्कृतिक उपाय रहा है।

लेकिन अब प्रेम रस में डूबे रंग-बिरंगे धागों की जगह चांदी और सोने की राखियों ने ली तो सामाजिक व्यवहार में कर्त्तव्यों को समझने की अपेक्षा परंपरा को पूरा भर करने की परिस्थिति आ गई है। प्रेम और सद्भावना की जगह दिखावे ने ले ली है। तभी तो रक्षा-बंधन के दिन सुबह उठते ही हर किसी के स्टेटस पर बस रक्षाबंधन की तस्वीरें और विडियो की भरमार होती है। अब कई बहनें स्वयं पहुँचने की अपेक्षा ई-कॉमर्स साइट ऑनलाइन ऑर्डर लेकर राखी दिए गए पते पर पहुँचा देती हैं। सोशल मीडिया पर दिखावे के स्थान पर यथार्थ जीवन में इन संबंधों को प्रेमरूपी जल से सींचा जाए तो हमेशा परिवार में सौहार्दता बनी रहेगी। राखी का अर्थ केवल बहन की रक्षा करना ही नहीं होता है बल्कि उसके अधिकारों और सपनों की रक्षा करना भी होता है।

- हिसार (हरियाणा)

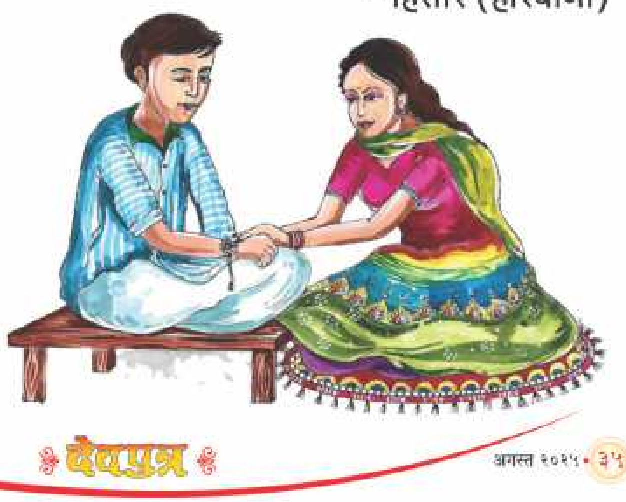

सबसे कम अवस्था की पर्वतारोही

– रजनीकांत शुक्ल

सान्वी सूद जब बहुत छोटी थी तो अपने पिता दीपक सूद के साथ पहाड़ की ट्रेकिंग पर गई। जहाँ उसे बहुत आनंद आया। फिर तो वह अधिकांश पिताजी के साथ ट्रेकिंग पर जाने लगी। इसी समय उन्होंने एवरेस्ट फिल्म देखी जिसका प्रभाव उन पर यह हुआ कि उन्होंने एवरेस्ट के बेस कैम्प के पर्वतारोहण का मन बना लिया। उनके पिता ने इस इच्छा का सम्मान करते हुए सारी व्यवस्थाएँ जुटाईं और कक्षा दो की सात वर्षीय छात्रा सान्वी ने नौ जून २०२२ को एवरेस्ट के आधार शिविर की कठिन चढ़ाई पूरी की और इस तरह वह एवरेस्ट आधार शिविर तक पहुँचने वाली सबसे कम अवस्था की भारतीय लड़की बन गई।

इतनी कम अवस्था में जब आमतौर पर बच्चे वीडियो गेम खेलने और कार्टून फिल्में देखने में व्यस्त रहते हैं सान्वी ने एक बहुत बड़ा कारनामा कर दिखाया था। सान्वी के रिश्तेदारों, विद्यालय, मोहल्ले, पड़ोस, शहर और दूर–दूर तक जिसने सुना उन लोगों ने प्रशंसा से लाद दिया। सबकी प्रशंसाओं से उत्साहित होकर सान्वी ने सोचा कि क्यों न अपने इस शौक को देश–दुनिया की लड़कियों के लिए प्रेरणा और उत्साह का प्रतीक बनाया जाए। बस फिर क्या था सान्वी ने अपने पिताजी से बात की और अफ्रीका की सबसे ऊँची चोटी जिसकी ऊँचाई ५८९५ मीटर है, किलिमंजारो पर २३ जुलाई २०२२ को विजय प्राप्त कर सबसे कम अवस्था की एशियाई लड़की होने का रिकार्ड स्थापित कर दिया।

सभी ने एक बार फिर प्रशंसा के पुल बांधे तो सान्वी का उत्साह सातवें आसमान पर पहुँच गया। उनके पिता का उनको पूरा सहयोग था यही कारण था

कि सान्वी ने एक के बाद एक अनेक देशों की ऊँची चोटियों पर विजय पाने का यह अपना अभियान जारी रखा। जिनमें सान्वी सूद ने ऑस्ट्रेलिया की सबसे ऊँची चोटी माउंट कोसियस्जको २२२८ को २७ मई २०२३ को और रूस की सबसे ऊँची चोटी माउंट एलब्रश ५६४२ मीटर को ३० जुलाई २०२३ को विजय प्राप्त करने के बाद ईरान की सबसे ऊँची चोटी माउंट दमावंद ५२०० मीटर पर पर्वतारोहण किया।

इस तरह मात्र नौ वर्ष की अवस्था तक इन्होंने संसार की पाँच जिनमें कुछ सबसे चुनौतीपूर्ण पर्वत चोटियों पर विजय प्राप्त कर सभी को चकित कर दिया।

कहने में तो यह सब आसान लगता है किन्तु यह यात्रा कितनी चुनौतीपूर्ण थी। यह बताते हुए सान्वी ने कहा कि मेरा सबसे पहला एवरेस्ट आधार शिविर वाला अभियान तो उत्साह और हिम्मत के साथ पूरा हो गया था लेकिन ऑस्ट्रेलिया के पर्वत शिखर कोसियस्जको को पूरा करने में बहुत कठिनाइयाँ आई। शून्य से भी बारह डिग्री नीचे के तापमान में बर्फ में धँस जाने वाले पाँवों के कारण से एक-एक कदम आगे बढ़ाना कठिन हो रहा था। इसी प्रकार रूस की सबसे ऊँची चोटी माउंट एलब्रश पर चढ़ते समय सान्वी के पिता उनके साथ नहीं थे क्योंकि एक स्थान पर उनका पैर फिसल जाने के कारण उनका आगे जा पाना संभव नहीं था। वे पीछे ही रुक गए और वाकी-टॉकी पर बात करके सान्वी की हिम्मत बढ़ाते रहे। माता-पिता में से किसी का साथ न होना नन्हीं सान्वी के लिए चुनौतीपूर्ण हो गया था।

अपने गाइड पर भरोसा करते हुए सान्वी आगे और आगे बढ़ती चली गई। पिताजी बात करते हिम्मत देते रहे कि मैं पीछे-पीछे आ रहा हूँ जबकि वे वास्तव में नहीं आ पा रहे थे।

नन्हीं सान्वी सूद ने इतनी कम आयु में अपने उल्लेखनीय दृढ़संकल्प और कौशल का परिचय देते

हुए असाधारण उपलब्धियाँ अर्जित कीं। पर्वतारोहण के क्षेत्र में सान्वी की अद्वितीय उपलब्धियों ने उनके साहस, हिम्मत और जुनून को प्रदर्शित किया। उनकी इन्हीं उपलब्धियों ने अनगिनत बच्चों और युवाओं को कुछ अनूठा करने की प्रेरणा से भर दिया।

सान्वी को 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' के लिए चुना गया। देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने उन्हें २६ दिसम्बर २०२४ को वीर बाल दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में आमंत्रित कर सम्मानित किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने सान्वी से मिलकर उनकी इन उपलब्धियों के लिए सराहना की।

इस सम्मान से उत्साहित होकर सान्वी ने मलेशिया की सबसे ऊँची चोटी माउंट किनाबालु और सिंगापुर की सबसे ऊँची चोटी माउंट बुकिट तिमाह को भी जीत लिया। अब वे दुनिया के सातों महाद्वीपों की सबसे ऊँची चोटियों पर भारत का तिरंगा लहराना चाहती हैं। अपने समवयस्क बच्चों और बड़ों को भी कहना चाहती हैं।

झर-झर झरते निर्झर जैसे हर पल झर सकते हो,
चाहो तो सब दुखी जनों की पीड़ा हर सकते हो।
अपनी पर आ जाओ तो है कुछ भी नहीं असंभव,
ठान अगर जो लिया उसे तुम पूरा कर सकते हो।।

- दिल्ली

INTO
YOUR
LIFE
SURYA
रिश्तों की ज़िंदगी में रोशनी फैलाता–आपका अपना सूर्या।
सूर्या रोशनी – सिर्फ रोशनी नहीं, भरोसे का नाम है। एक ऐसा भरोसा जो रिश्तों में प्यार की रोशनी भरता है। बात रोज़ की ज़रूरतों की हों या आपकी सुरक्षा की, हमारी कोशिश रही है कि हम – हमेशा आपको कुछ नया दें, और आपके इस भरोसे को और भी मज़बूत बनाएं।
आइए मिलकर इन सुंदर पलों को और भी ज्यादा रोशन करें एवं विकसित भारत की ओर तेज़ी से कदम बढ़ाएँ।
Consumer Lighting | Steel & PVC Pipes | Fans | Appliances | Professional Lighting
I am SURYA | 50 TRUST
SURYA ROSHNI LIMITED | www.surya.co.in | surya surya_roshni surya.roshni surya-roshni
Email: info@surya.in Tel.: +91-11-47108000

घमण्डी शेर

– माणक तुलसीराम गौड़

एक बड़ा विशाल जंगल था। जिसमें अनेक जानवरों के साथ एक शेर भी रहता था। जो बड़ा घमण्डी था तथा अपने बल का घमण्ड दिखाने के लिए अकारण ही निर्दोष जानवरों को मारा करता था। जिनमें गाय, बैल, भैंस, हरिण, नीलगाय, जेबरा, गधा, घोड़ा तथा जिराफ थे। उनमें से कुछ को खाता तथा शेष यों ही जंगल में सड़ते रहते थे। जिससे एक तो सड़ांध से नाना प्रकार की बीमारियाँ फैलती और दूसरी ओर उन जानवरों की संख्या भी दिनोंदिन घटने लगी। हाँ, यह ठीक है कि शेर घास नहीं खा सकता, परन्तु अकारण यों जानवरों को निर्दयता से मारना कहाँ तक उचित है ?

सारे जानवरों ने इस समस्या का निदान खोजने के लिए एक महत्वपूर्ण सभा बुलाई, जिसमें सभी ने अपनी–अपनी पीड़ा बताई तथा अपने वंश को बचाने की गुहार लगाई, परन्तु जंगल के राजा से लड़ने–भिड़ने के लिए कोई आगे नहीं आया।

तब एक बूढ़े जंगली भैंसे ने यों कहा– ''देखो भाई! मैं बूढ़ा हूँ। मेरे शरीर में अब वह बल एवं स्फूर्ति नहीं रही, जिसके लिए मैं विख्यात था, परन्तु इन खूँखार और निर्दयी शेरों, बाघों एवं चीतों से कैसे निपटा जाए, यह उपाय मैं अवश्य बता सकता हूँ। इसके लिए सबसे अनिवार्य बात यह है कि इस जंगल के हम सब जानवरों में एकता होनी चाहिए। जो जिस योग्यता का है, उसे अपनी वह योग्यता दिखानी होगी। यानी सबका साथ, सबका संरक्षण वाली बात को चरितार्थ करना पड़ेगा।''

बूढ़े भैंसे द्वारा यह बात बताए जाने पर शेष पशुओं में से गाय ने कहा– ''भैंसा भैया! आप हमें तनिक यह बात समझाकर कहो।''

तब बूढ़े भैंसे ने यों समझाया– ''देखो! तुम्हें करना यह है कि पहले तो सब सतर्क रहो। गफलत बिलकुल नहीं पालनी। हमला होते देखें, तब बचाव हेतु भागना तो है ही साथ में चिल्लाना भी है, ताकि शेष पशु भी चेत जाएँ। हमारे तन–मन में जितनी शक्ति ईश्वर ने दी है, उसे प्राण रहते या तन में आखिरी साँस

रहने तक सामना करने में लगानी है। जिसके पास तीखे सींग हैं, वे उनका प्रयोग करें। जिनके पास दुलत्ती है, वे उसका उपयोग करें। मुँह से काटें अन्यथा आवाज तो करें ही। इससे तुम सबमें उस आततायी से सामना करने का साहस उत्पन्न होगा। इससे तुम्हारा आत्मबल भी बढ़ेगा और यह हमेशा याद रखो कि लड़ाई में बल की तुलना में आत्मबल अधिक काम आता है।''

तब हरिण बोला– ''दादा भाई! मैं क्या करूँ?''

उसकी मीठी, निरीह एवं कंप-कंपाती आवाज सुनकर पहले तो सबने ठहाके लगाए। फिर उसे भी आश्वस्त करते हुए भैंसा बोला– ''तुम तो उन्हें देखते ही नौ–दो–ग्यारह हो जाना। तुम्हारे पास तो जबरदस्त कुलाँचें हैं, मेरे भाई।'' सबके परामर्श से ऐसा ही हुआ।

दूसरे दिन सूर्योदय होते ही उस निर्दयी शेर ने एक बूढ़ी गाय पर धावा बोला। हरिण आवाज करता हुआ दौड़ पड़ा। जेबरे एवं गधे रेंकने लगे। घोड़े हिनहिनाने लगे। बंदर पेड़ों पर खिर्र–खिर्र की आवाजें करने लगे। जंगल में चेतना जाग उठी। इतमें में भैंसों का एक झुण्ड वहाँ आ पहुँचा।

शेर तो हमेशा की तरह निडर एवं बेखबर था और वह बूढ़ी गाय के गले में अपने नुकीले दाँत गड़ाने ही वाला था कि बूढ़े भैंसे के संकेत पर एक सशक्त भैंसे ने अपने मजबूत एवं तीखे सींगों से उस शिकारी पर प्रहार कर एक ही झटके में उसे दस फीट ऊँचा उछाल दिया। वह चक्कर–घिन्नी हो नीचे जमीन पर गिरा ही था कि पास में खड़े दूसरे भैंसे ने फिर उसकी वही दुर्गति की।

तभी पास में खड़ी गायों ने अपने नुकीले सींगों से उसका बुरा हाल किया तो जिराफ ने अपनी लम्बी टाँगों से दे दनादन–दे दनादन जबरदस्त प्रहार किया। शेर को नानी याद आने लगी। शेर की सिट्टी–पिट्टी गुम। वह जान बचाकर जंगल में भाग गया। यह देखकर शेष जानवर अति प्रसन्न हुए। उन्हें एकता की ताकत का पहली बार अनुभव हुआ।

शेर अपनी चोटों एवं घावों को सहलाते हुए सीधा डॉक्टर भालू के पास गया। डॉक्टर भालू के पूछने पर अपने घावों के कारण को छुपाते हुए जंगल में लकड़ी से लग जाना बताया।

भालू जामवन्त के वंश का था, तुरन्त समझ गया। बोला– ''शेर महाराज! ये घाव तो किसी जंगली और शक्तिशाली भैंसे के सींगों के प्रहार से हुए प्रतीत होते हैं। सच बताइए, जिससे मैं आपका उपचार ठीक प्रकार से कर सकूँ। डॉक्टर या वैद्य से अपना रोग और रोग का कारण छिपाना ठीक नहीं।''

तब वह दुष्ट शेर जीवन में पहली बार दहाड़ते हुए नहीं, बल्कि मिमियाते हुए बोला– ''हाँ, वैद्य जी! हाँ। आप सत्य कह रहे हैं।''

जंगल का एक राजा शेर भैंसों से मार खाकर लज्जा से पानी–पानी हो रहा था और इज्जत जाने से आँखों में पानी भी आ गया था। उसे पहली बार मार और मौत से सामना हुआ था, जो वह हमेशा दूसरों को कराता आया है। सच ही कहा गया है कि प्राणी को वही मिलता है, जो वह दूसरों को देता व बाँटता आया है। और हाँ! घमण्ड तो उसका कब का चूर हो चुका था।

– बैंगलूरू (कर्नाटक)

सदा तिरंगा यूँ लहराए

– डॉ. सत्यवान सौरभ

दुश्मन को ये धूल चटाए,
विश्व विजेता बनता जाए।
आसमान को छूकर आए,
सदा तिरंगा यूँ लहराए।।

वीरों की आन–बान है ये,
मातृभूमि की शान है ये।
भारत की पहचान है ये,
बच्चों को ये बात बताए।
सदा तिरंगा यूँ लहराए।।

लिए समृद्धि रंग हरा है,
केसरिया बलिदान भरा है।
और सफेद शांति धरा है,
चक्र नीला प्रगति लाए।
सदा तिरंगा यूँ लहराए।।

इस झंडे की साख बड़ी है,
आजादी की बात जुड़ी है।
झंडे से ही कसम खड़ी है,
इस खातिर सब मर मिट जाए।
सदा तिरंगा यूँ लहराए।।

बच्चों झंडा ध्येय हमारा,
ये ही तन मन धन है सारा।
प्यारा भारत देश हमारा,
विश्व विजेता बनता जाए।
सदा तिरंगा यूँ लहराए।।

– भिवानी (हरियाणा)

लघुकथा

स्वाभिमान

– आशीष सकलेचा

मैले पुराने कपड़े पहने हाथ में एक झोला लिए १२ वर्ष के लड़के ने एक दुकान के बाहर आवाज लगाई– ''सेठ जी! ओ सेठ जी!'' जब तक सेठ जी ने उसे उत्तर नहीं दिया तब तक वह बार–बार ''सेठ जी! सेठ जी!'' आवाज लगाता ही रहा।

आखिरकार सेठजी ने झल्लाकर कहा– ''क्या है ? क्यों चिल्लाए जा रहा है ?'' उस लड़के ने बड़ी विनम्रता से कहा– ''सेठ जी! आपके बूट पॉलिश कर दूँ।''

सेठ जी ने कहा– ''नहीं नहीं।'' पर वह बार–बार आग्रह करता ही रहा और कहने लगा– ''सेठ जी! सुबह से दोहपर हो गई अभी तक बोहनी नहीं हुई है। आप बूट पॉलिश करवा लो ताकि उन पैसों से मैं कुछ खाकर अपना पेट भर सकूँ।''

सेठ जी ने कहा– ''बूट पॉलिश तो नहीं करवाना है पर तुझे कुछ खाना हो, तो मैं खाने को कुछ अवश्य दे सकता हूँ।''

उस लड़के ने कहा– ''नहीं सेठ जी! मैं मेहनत करके ही खाता हूँ, भले भूखा रह जाऊँ।'' उस लड़के का स्वाभिमान देख सेठ जी आवाक् रह गए और उन्होंने उससे अपने नए–पुराने सारे बूट पॉलिश करवा लिए। मेहनत कर इतने पैसे कमाने से वह लड़का बहुत प्रसन्न हुआ। सेठ जी भी बहुत प्रसन्न थे कि उस लड़के ने न भीख माँगी न खाना माँगा, मेहनत कर अपना पेट भरेगा।

– जावरा (म. प्र.)

कविता

वर्षा रानी

– डॉ. भेरूँलाल गर्ग
– भीलवाड़ा (राजस्थान)

वर्षा रानी बड़ी सुहानी
लेकर आई पानी,
चले उमड़कर नदियाँ–नाले
धरा हो गई धानी।

बिजली चमके, नभ में दमके
इंद्रधनुष मुसकाए,
काले मेघा उमड़–घुमड़कर
कैसी दौड़ लगाएँ।

है हरियाली छटा निराली
चले मंद पुरवाई,
मनभावन सावन–भादौ में
वर्षा रानी आई।

जंगल–जंगल होता मंगल
कोयल गीत सुनाए,
नाचे मोर, पपीहा, मेंढक
फूले नहीं समाए।

सोनू और लालपरी

– वीरेंद्र बहादुर सिंह

वर्षा ऋतु सोनू को बहुत अच्छी लगती थी। छत से आने वाली बूँदों की आवाज उसे बहुत अच्छी लगती थी। रास्ते पर रंग–बिरंगी छतरियों का दृश्य देखकर वह भी अपनी गुलाबी रंग की छोटी–सी छतरी लेकर बरसात में निकल पड़ती। वर्षा के दिनों में खेतों से आने वाली मोर की आवाज सुन कर वह प्रसन्न हो जाती।

उस दिन बहुत तेज वर्षा हो रही थी। सोनू के घर के सामने पानी भर गया था। सोनू और उसके भाई दीपू को पानी में छप–छप कर दौड़ने में बहुत आनन्द आ रहा था। उनके साथ उनकी पाली हुई बिल्ली मीनू भी पानी में कूद पड़ी थी।

सोनू और दीपू का खेल देखने के लिए दादाजी भी आकर बरामदे में खड़े हो गए थे। दादाजी ने पुरानी नोटबुक से कागज फाड़कर सोनू और दीपू के लिए नाव बना दी थी। भाई–बहन पानी में अपनी नाव तैराने लगे। भाई–बहन में अपनी–अपनी नाव को लेकर प्रतियोगिता प्रारंभ हो गई थी। सोनू की नाव आगे निकल गई थी। दोनों को बहुत आनंद आ रहा था।

तभी एक भिखारी अपने छोटे भाई के साथ सोनू के घर के सामने आया। दोनों वर्षा के पानी से खूब भीग गए थे। लग रहा था कि दोनों भाई अनाथ थे। दादाजी ने दोनों को पुराने रेनकोट पहनने के लिए दिए।

इसके बाद सोनू और दीपू घर गए और माँ से पुराने कपड़े और खाना लेकर आए। दादाजी हमेशा कहते थे कि गरीब लोगों की सहायता करनी चाहिए। पशु–पक्षियों के प्रति दयाभावना रखनी चाहिए। उन्हें पानी और दाना देना चाहिए। दोनों अनाथ भिखारी भाई खाना और कपड़े पाकर बहुत प्रसन्न हुए।

वर्षा बंद होने के बाद सोनू और दीपू अपनी बिल्ली मीनू के साथ घर के उद्यान में गए। उद्यान में सुंदर फूल खिले थे। फूलों की पंखुड़ियों पर वर्षा के पानी की बूँदें बहुत अच्छी लग रही थीं। माँ ने भोजन के लिए बुलाया तो सोनू ने घर आकर पहले बिल्ली मीनू को दूध पिलाया। पानी में भीगने के कारण मीनू को ठंड लग रही थी, इसलिए उसे टोकरी में बैठाकर सोनू ने उसे शॉल ओढ़ा दिया।

सोनू के दादाजी हमेशा सलाह देते थे कि रोज भलाई का काम करना चाहिए। गरीब को भोजन कराना, गरीब विद्यार्थियों को पुस्तकें देना, गरीब और लाचार व्यक्ति को अपने से जो हो सके, सहायता करना। दादाजी द्वारा दिए संस्कारों के कारण से सोनू और दीपू सभी की बहुत सहायता करते थे।

सोनू उद्यान से सुंदर लाल गुलाब का फूल तोड़कर लाई थी। फूल पर पानी की बूँदें थीं। इससे गुलाब का फूल बहुत ही सुंदर लग रहा था। रात को फूल लेकर सोनू अपने कमरे में गई। उसने गुलाब का वह फूल टेबल पर रख दिया। उसने देखा कि गुलाब का वह फूल धीरे–धीरे बड़ा होने लगा था। थोड़ी देर में वह लाल गुलाब का फूल परी बन गया। सोनू उससे बातें करने लगी।

लालपरी सोनू को अपने पंखों पर बैठाकर अपने देश ले गई। परियों के देश में सुंदर महल और बगीचे थे। उन बगीचों में सफेद, गुलाबी और पीली अलग–अलग रंग की परियाँ थीं। बगीचे में चॉकलेट का पेड़ था। लाल परी ने सोनू को चॉकलेट और आईस्क्रीम दी। उसे सुंदर कपड़े

भी दिए। सोनू बहुत प्रसन्न हो गई। लाल परी ने सोनू को पंखों वाली परी जैसी ड्रेस दी। लालपरी ने कहा कि यह जादुई पोशाख है। इसे पहन कर तुम जो माँगोगी, वह तुम्हें मिल जाएगा।

सोनू को तो आनंद ही आ गया। उसने तुरंत वह पोशाख पहन ली। उसकी आकाश में उड़ने की इच्छा हुई। वह आकाश में उड़ने लगी। सोनू ने अपनी पसंद का पेन माँगा। उसे पेन भी मिल गया। सोनू को लालपरी के साथ घूमने में आनंद ही आ गया।

अचानक सोनू को मीनू बिल्ली की आवाज सुनाई दी। उसे लगा कि मीनू भी उसके साथ आई है। मीनू की आवाज से सोनू जाग गई। उसने देखा कि टेबल पर लाल गुलाब का फूल पड़ा है। सोनू समझ गई कि उसने लाल परी का सपना देखा था।

सोनू ने अपने स्वप्न की बात दादाजी को बताई। दादाजी ने उसे समझाया– ''तुमने अनाथ बच्चों की सहायता की, इसलिए तुम्हारे मन को बहुत संतोष मिला और तुम्हें सुंदर स्वप्न दिखाई दिया। सपने में परी ने तुम्हें बहुत सारी भेंट दीं। हम भलाई का काम करते हैं तो भगवान हमें बहुत सुख और शांति देता है।''

– नोएडा
(उ. प्र.)

लघुकथा

तिरंगा

– शैलजा भट्टड़

''माँ! तिरंगा कब लेकर आओगी? कल हमारी स्टेज रिहर्सल है।'' समिधा थोड़ी परेशानी के भाव लिए पूछने लगी।

''आज शाम तक ले आऊँगी समिधा! परेशान मत हो। वैसे एक बात बताओ रिहर्सल तिरंगे के बिना भी तो हो सकती है और कार्यक्रम को तो अभी पूरा एक सप्ताह बाकी है, फिर तुम इतना परेशान क्यों हो रही हो?''

''नहीं माँ! रिहर्सल तिरंगे के बिना बिल्कुल भी नहीं हो सकती। तिरंगे को कैसे पकड़ना है, कैसे रखना है, किसे हमारे हाथ से कैसे लेना है, फिर कैसे कहाँ रखना है, यह सब हम सबको अच्छे से समझना आवश्यक है। इसमें थोड़ी–सी भी भूल स्वीकार्य नहीं होगी।''

''ऐसा क्यों?'' सब कुछ समझते हुए भी स्मिता ने नासमझ बनते हुए पूछा।

''माँ! तिरंगा हमारा सम्मान है, स्वाभिमान है, यह हमारे देश की पहचान है, हमारी स्वतंत्रता का प्रमाण है, हमारी हिम्मत की नींव है। तिरंगे के हर रंग के पीछे कोई न कोई संदेश व मार्गदर्शन छिपा है। अशोक चक्र भी हमें कर्मठता का संदेश देता है। फिर इसकी थोड़ी–सी भी

अवहेलना कोई कैसे सहन कर सकता है।'' बहुत ही भावुक मन से स्मिता ने बिना कुछ कहे समिधा को गले से लगा लिया और उसकी पीठ थपथपाने लगी। आज अपनी पुत्री व तिरंगे दोनों के लिए स्मिता बहुत ही गर्व अनुभव कर रही थी। वह जान गई थी कि बड़ी होकर समिधा भारत की एक जागरूक, संवेदनशील व जिम्मेदार नागरिक बनेगी। क्योंकि संस्कार और समझदारी तो उसमें कूट–कूट कर भरी है।

– बेंगलूरु (कर्नाटक)

प्रसंग– २९ अगस्त राष्ट्रीय खेल दिवस

ध्यानचंद का जादू

– राजेश गुजर

संभवत: आपको यह ज्ञात नहीं हो कि मेजर ध्यानचंद हॉकी के मैदान पर हिटलर से मिले थे और उन्हें नतमस्तक कर दिया था। बात बर्लिन ओलंपिक वर्ष १९२६ की है, जब हॉकी का फाइनल मुकाबला जर्मनी और भारत के बीच खेला जा रहा था। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद अपने खेल के जादू से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर रहे थे। गेंद उनकी हॉकी से चिपककर चलती और सीधे गोल में जाती थी। उसी समय हिटलर भी मैच का आनंद ले रहे थे, परंतु उन्हें आशंका थी कि ध्यानचंद की हॉकी में कोई चुंबकीय शक्ति है जो गेंद को हॉकी से चिपकाकर रखती है।

अपनी आशंका दूर करने के लिए हिटलर ने एक के बाद एक ऐसी तीन हॉकी स्टिक बदलवाई परंतु साँच को आँच नहीं। ध्यानचंद गोल पर गोल करते रहे। अंतत: भारत ने वह मैच आठ गोलों से जीत लिया। मैच की समाप्ति पर हिटलर से नहीं रहा गया। उन्होंने ध्यानचंद को पास बुलाकर बात की और बधाई देते हुए पूछा– ''तुम भारत में क्या करते हो ?'' ध्यानचंद ने सहजता से उत्तर दिया– ''मैं भारतीय सेना में सैनिक हूँ।''

हिटलर ने ध्यानचंद का उत्तर सुनकर कहा– ''आप भारत छोड़कर यहाँ आ जाओ, मैं आपको मार्शल बना दूँगा।''

''जी नहीं! धन्यवाद!'' अपना निर्णय गोल की तरह दागते हुए ध्यानचंद ने कहा– ''मैं अपने देश से बहुत प्यार करता हूँ अत: मैं वहाँ सैनिक बना रहूँ तो भी मुझे स्वीकार्य है।''

दुनिया पर राज करने वाला हिटलर, ध्यानचंद की देशभक्ति के सामने कुछ न बोल सका और नतमस्तक हो गया। अहंकारी को देशभक्त ने इस प्रकार हरा दिया।

– महेश्वर (म. प्र.)

छ: अँगुल मुस्कान

एक जीव वैज्ञानिक, अतिथि प्राध्यापक बन कर कक्षा में आए और बोले– आज मैं मेंढक के शरीर के विषय में जानकारी दूँगा। इसके लिए मैं आपके लिए मेंढक भी लाया हूँ। यह कहते हुए उन्होंने बैग से एक पैकेट निकाला, उसे खोला। देखा उसमें मक्खन लगा हुआ ब्रैड रखा हुआ था। कुछ देर सोचकर वे बोले– सुबह जो नाश्ते में खाया था वह क्या था ?

*****

अन्नू मन्नू ट्रेन में जा रहे थे। सामने की सीट पर बैठे सोनू ने उन्हें केला दिया।

अन्नू ने केला छील कर खाना प्रारंभ किया ही था कि ट्रेन एक सुरंग में प्रवेश कर गई, चारों ओर अँधेरा छा गया।

सुरंग से निकलते ही फिर उजाला हुआ। तभी घबराये हुए अन्नू ने मन्नू से कहा– केला मत खाना, इसमें कुछ गड़बड़ है। इसे खाते ही कुछ देर के लिए आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है।

*****

एक बार पति–पत्नी कार में जा रहे थे। अचानक पत्नी ने एक गधे को देखा और उसने अपने पति से कहा कि आपका रिश्तेदार जा रहा है।

पति ने गधे से कहा– नमस्ते ससुर जी!

*****

सोनू– साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। इसके लिए क्या उपाय किया जाना चाहिए।

मोनू– साँप को किसी और चीज से मारना चाहिए।

सामाजिक जीवन में हमारा कार्य विस्तार

– नारायण चौहान

प्यारे बच्चो!

आप बहुत ही प्रसन्न होंगे। पिछली कड़ी में मैंने मेरे सभी सरसंघचालकों के संदर्भ में परिचय कराया था। जगत् जननी भारत माता पुन: विश्वगुरु के सिंहासन पर विराजमान हो इस उद्देश्य से मेरा कार्य समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विस्तरित हुआ। आज मैं उन समस्त क्षेत्रों एवं उनमें चलने वाले मेरे स्वयंसेवकों द्वारा किए जा रहे कार्यों के संदर्भ में जानकारी देता हूँ।

मेरे प्रथम आद्य सरसंघचालक प. पू. डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के रहते वर्ष १९४० तक संघ का कार्य सम्पूर्ण देश के कोने–कोने तक पहुँच गया था। इसी वर्ष संघ के स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण के लिए नागपुर में तृतीय वर्ष का आयोजन था। इसी वर्ग में प. पू. डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने अपने बौद्धिक में कहा था– ''मैं यहाँ एक लघु भारत के दर्शन कर रहा हूँ।''

अर्थात् इस वर्ग में सम्पूर्ण देश के प्रत्येक प्रान्त का प्रतिनिधित्व हो गया था। आपको ज्ञात है ही डॉ. साहब के देवलोक गमन के पश्चात सरसंघचालक का दायित्व प. पू. गुरुजी पर आया। कार्य विस्तार को केन्द्रित कर सम्पूर्ण देश में गुरुजी के प्रवास हुए। कार्य को गति प्राप्त हुई देशभर में शाखाओं का विस्तार हुआ।

इसी बीच १९४८ में पू. महात्मा गाँधी की हत्या हो गई। उस समय तत्कालीन सरकार जो हिन्दुत्व और मेरी विरोधी थी ने यह झूठा आरोप मुझ पर मढ़ दिया। मेरे कार्यों पर सरकार ने प्रतिबंध लगा दिए। मेरे स्वयंसेवकों एवं प्रचारकों को जेलों में बंद किया गया। कई कार्यकर्ताओं की हत्या की गई। किन्तु मेरे सरसंघचालक पू. गुरुजी बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए। मेरा कार्य पवित्र था। साँच को क्या आँच। बस तो सरकार को प्रतिबंध उठाना पड़ा।

सभी स्वयंसेवक दुगने उत्साह से शाखा कार्य में लग गए। यही समय राजनैतिक और सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था। अत: पू. गुरुजी ने सामाजिक लेखन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने वरिष्ठ स्वयंसेवकों को कार्य करने हेतु भेजा। ५० के दशक से लगाकर ८० के दशक तक समाज जीवन के अनेक क्षेत्रों में कार्य हुए।

१) महिलाओं को संगठित कर उनके लिए राष्ट्रभक्ति, सेवा और आत्मनिर्भरता की भावना हेतु वर्ष १९३६ में **राष्ट्र सेविका समिति** की स्थापना हुई।

२) विद्यार्थियों के लिए १९४९ में **अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्** की स्थापना हुई।

३) ग्रामीण क्षेत्र एवं वनवासी क्षेत्र के कल्याण

के लिए वर्ष १९५२ में जनजातीय समाज की शिक्षा स्वास्थ्य एवं आत्मसम्मान के विकास के लिए **वनवासी कल्याण आश्रम** की स्थापना हुई।

४) मजदूरों के लिए १९५५ में **भारतीय मजूदर संघ** की स्थापना वरिष्ठ प्रचारक मा. दत्तोपंत जी ठेंगडी ने स्थापना की।

५) हमारे सनातनी हिन्दू सभी एकता के साथ समरस होकर साथ चले। अत: १९६४ में **विश्व हिन्दू परिषद्** की स्थापना हुई।

६) शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान, चरित्र और संस्कार युक्त पीढ़ी के निर्माण हेतु १९७७ में **विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान** की स्थापना हुई।

७) किसानों के लिए १९७९ में **भारतीय किसान संघ** की स्थापना हुई।

८) सामाजिक क्षेत्र में वनवासी एवं वंचित वर्ग की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सेवा के लिए वर्ष १९८९ में **सेवाभारती** की स्थापना हुई।

९) भारत आत्मनिर्भर हो और अपना मन चित्त और मानस स्वदेशी हो अत: १९९१ में **स्वदेशी जागरण मंच** की स्थापना हुई।

इस प्रकार अनेक आन्दोलन, सेवाकार्य और सम-सामयिक संगठन मेरे स्वयंसेवकों ने राष्ट्र कार्य हेतु संचालित किए।

आप भी ऐसे संगठनों का पता लगाइए।

– इन्दौर
(मध्य प्रदेश)

हृदय से आनंदित हुआ श्रीमान्! आपके यहाँ यह रचना जून २०२२ में भेजी थी। फिर कुछ प्रतीक्षोपरांत बीच-बीच में रचनाएँ भेजता रहा। स्वयं को आपके अन्य अंक पढ़कर कभी-कभी तौलता भी था। इस क्रम में पत्रिका मेरे लिए और दूर की (उच्च स्तरीय) सी प्रतीत होती थी। पर कुछ विद्वान साहित्यकारों (जो आपके यहाँ छपते रहे हैं) से कभी-कभी बातचीत पर बड़ी सरलता से सुनने को मिलता कि नहीं, 'देवपुत्र' रचना छापती है। वे लोग स्तरीय रचनाओं को रखे रहते हैं। हालाँकि मेरे अंदर कभी रचना को लेकर वैसी निराशा नहीं आती। भेजना छोड़ता भी नहीं, पर छपने का बड़ा लोभ हमेशा रहता है।

उस दिन आपने फोन पर इसकी सूचना देते हुए एक हार्दिक संपादन की राय माँगी, मेरे लिए वह दीर्घ स्मरणीय तथा आभार भरा रहेगा। मात्रागत और कुछ अन्य त्रुटियाँ थीं। यह बात मुझे आगे सावधान रखेगी।

जून २०२५ अंक में 'बरगद दादा' कविता को आपने अपनी पत्रिका में स्थान दिया, मैं उसका हृदयस्थ आभारी हूँ। एक संपादक की रचनाचयन-प्रक्रिया क्या होती है; कैसी उसकी व्यवस्थाएँ व संयोजनाएँ होती हैं, यह भी पता चलता है।

आपके साथ पूरी पत्रिका टीम का बहुत-बहुत आभार! सभी रचनाकारों को बधाइयाँ!! आपके संपादन की यशस्विता तथा पत्रिका की उच्च साहित्यिकता की कामना के साथ।

– वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज
नौबतपुर (बिहार)

बाल पहेलियाँ

– सन्तोष मालवीय 'प्रेमी'

(१) हरा सफेद केसरिया संग,
चक्र अशोक बड़ा ही महान।
श्रद्धा और आदर मैं पाता,
हर देशवासी की मैं शान।।

(२) धुआँ विषैली गैस चूसकर,
पर्यावरण मैं साफ करूँ।
शुद्ध वायु, लकड़ी, शीतलता,
दे मानव कल्याण करूँ।।

(३) लाल रंग का घर है मेरा,
मैं चिट्ठी खाते रहता हूँ।
समाचार सबके सुख–दुख के,
सबसे लेता रहता हूँ।।

(४) बीच पेट में दो हाथ लगे,
चक्कर रहते काट।
पाँच–पाँच मील पर बारह,
स्टेशन बनाई काट।।

(५) लाल रंग मेरे घर का है,
ताला सदा बंद रहता है।
जन–जन के मन को मैं भाऊँ,
सबसे मैं संदेशा पाऊँ।।

(६) गाँठ लिये मीठी–लाठी हूँ,
हरे रंग की चोटी मेरी।
गुड–शक्कर का व्यापारी हूँ,
आवभगत घर–घर मेरी।।

– इटारसी (म. प्र.)

उत्तर– १) तिरंगा झंडा, २) वृक्ष, ३) लेटरबॉक्स, ४) घड़ी, ५) लेटरबॉक्स, ६) गन्ना।।

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२५

वरिष्ठ समाज सेवी श्री. रमेश गुप्ता द्वारा स्थापित केशर पूरन स्मृति पुरस्कार हेतु अलग से कोई प्रविष्टि आमंत्रित नहीं की जाती बल्कि जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य 'देवपुत्र' के 'पुस्तक परिचय' स्तंभ में परिचयार्थ प्रकाशित कृतियों में से किसी एक का चयन कर यह पुरस्कार दिया जाता है।

पुरस्कार न चाहने वाले लेखक अपनी कृतियाँ भेजते समय एक संक्षिप्त सूचना 'पुरस्कार के लिए नहीं केवल परिचय प्रकाशन हेतु' लिखित रूप में दे सकें तो उन कृतियों को प्रतियोगिता परिधि से बाहर रखा जा सकेगा। आपकी प्रकाशित कृतियाँ 'भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान' की अमूल्य धरोहर बनती है इसलिए प्रकाशित कृतियाँ प्रेषित अवश्य करें।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

'देवपुत्र' द्वारा आयोजित निम्नांकित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए आपकी प्रविष्टियाँ ३१ दिसम्बर २०२५ तक सादर आमंत्रित हैं।

सभी प्रतियोगिताओं के लिए सामान्य नियम– १) एक प्रतियोगिता हेतु एक ही प्रविष्टि भेजें। २) प्रविष्टि पर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम अपना पूरा नाम, पता, पिनकोड एवं व्हाट्सएप नम्बर अवश्य लिखें। ३) प्रविष्टि हेतु रचनाएँ सुवाच्य अक्षरों में हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टाइप की हों। ४) प्रविष्टि संपादक देवपुत्र–४०, संवाद नगर, इन्दौर–४५२००१ (म. प्र.) पर डाक द्वारा अथवा editordevputra@gmail.com पर मेल करें। ५) निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। ६) पुस्तकों के अतिरिक्त प्रतियोगिता में प्राप्त सभी रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' के पास सुरक्षित होगा। ७) कृपया रचनाओं के स्वरचित होने का प्रमाणपत्र अवश्य भेजें।

श्री. भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२५

'देवपुत्र' के पूर्व व्यवस्थापक श्री. शांताराम शंकर भवालकर जी की पावन स्मृति में आयोजित यह स्वरचित बाल कहानी प्रतियोगिता केवल कक्षा ४ से १२ तक अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के लिए ही है। बच्चे अपने किसी भी मनपसंद विषय पर स्वयं की लिखी हुई कोई बाल कहानी इस प्रतियोगिता में भेज सकते हैं।

पुरस्कार होंगे– प्रथम १५००/– द्वितीय ११००/– तृतीय १०००/–
प्रोत्साहन (२) ५००/– ५००/–

मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२५

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार स्व. डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से प्रायोजित यह पुरस्कार जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य प्रकाशित हिन्दी बाल साहित्य की 'यात्रा वृत्तान्त' विधा के लिए निश्चित किया गया है। प्रविष्टि स्वरूप उक्त अवधि में प्रकाशित यात्रा वृत्तांत की प्रकाशित पुस्तक ३ प्रतियों में भेजना आवश्यक है।

सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर पुरस्कार निधि ५०००/– होगी।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२५

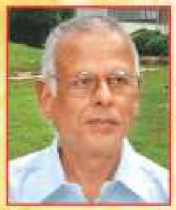

वरेण्य बाल साहित्य सर्जक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष विषय 'भारतीय कुटुम्ब व्यवस्था विषय पर केन्द्रित बाल कहानियाँ' निश्चित किया गया है। आप इस विषय पर अपनी बाल कहानी प्रविष्टि स्वरूप अवश्य भेजिए।

पुरस्कार होंगे– प्रथम १५००/– द्वितीय १२००/– तृतीय १०००/–
प्रोत्साहन (२) ५००/– ५००/–

पुस्तक परिचय

डॉ. विमला भण्डारी बाल साहित्य संसार की न केवल सु-प्रतिष्ठित रचनाकार हैं बल्कि वे एक कुशल संपादक भी हैं। किसी भी विधा के चयनित लेखकों की रचनाओं को संपादित कर पुस्तकाकार में प्रकाशित करते हुए आपने बाल साहित्य की अनेक प्रसिद्ध-कम प्रसिद्ध विधाओं को पोषित किया है। आपकी विविध विधाओं की संपादित प्रमुख कृतियाँ हैं-

---

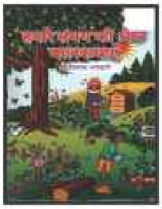

हमारे समय की श्रेष्ठ बालकथाएँ

मूल्य- ३००/-

नई पुरानी पीढ़ी के वरेण्य बाल कहानीकारों की ३४ कहानियों का यह संकलन एक विविध फूलों के गुच्छ जैसा है इसकी कहानियाँ निश्चित रूप से आपका मनोरंजन और प्रबोधन करेंगी।

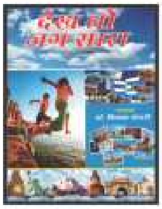

देखा लो जग सारा

मूल्य- ४००/-

पर्यटन भला किसे नहीं भाता, लेकिन भावनाओं, संवेदनाओं और संस्कृति-बोध के साथ यह पर्यटन, देश-दर्शन बन जाता है। यात्रावृत्तांत पाठकों को भी यह दर्शन कराने का यथा संभव शाब्दिक प्रयास करता है। प्रस्तुत पुस्तक में भारत के विभिन्न प्रांतों के साथ विश्व के भी अनेक स्थलों का यात्रावृत्तांत प्रस्तुत करती है।

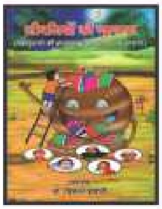

जीवनियों की गुल्लक

मूल्य- ३००/-

अपना जीवन श्रेष्ठ बनाना हो तो हमें महापुरुषों की जीवनी अवश्य पढ़ना चाहिए। वे आदर्श हमारे जीवन की दिशा एवं दशा को सँवारते हैं। प्रस्तुत पुस्तक ऐसे ३५ महानपुरुषों एवं नारियों की संक्षिप्त जीवनियों का प्रेरक संकलन है।

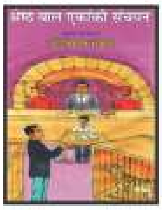

श्रेष्ठ बाल एकांकी संचयन

मूल्य- २००/-

नाटक बच्चों बड़ों सबकी प्रिय विधा है। एकांकी छोटे होने से और भी लुभाते हैं। २२ बाल एकांकी एक साथ प्रस्तुत करती है यह पुस्तक जिसे लिखा है २२ लेखकों ने।

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के प्रकाशक हैं साहित्यगार धामाणी मार्केट की गली चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३

कविता

चिड़िया रानी आओ ना

– गोपाल माहेश्वरी

चिड़िया रानी आओ ना
पँखों को फैलाओ ना
उड़कर धरती की राखी
चंदा तक पहुँचाओ ना

सावन आया हरियाला
यह महिना राखीवाला
चंदा आ ना पाएगा
राखी कहाँ बँधाएगा ?
धरती जा ना पाएगी
बस राखी भिजवाएगी
जी भर भुट्टे खाओ ना
फिर फुर्र से उड़ जाओ ना

चोंच में राखी ले जाना
भूल के मत गाना गाना
जो राखी गिर जाएगी
फिर तू क्या पहुँचाएगी ?
बदली में खो जाना ना
राह में कहीं नहाना ना
बैठी पंख खुजाओ ना
चिड़िया झटपट जाओ ना

वहाँ चांदनी भाभी है
घर वह बच्चों का भी है
कितने सारे तारे हैं
सभी भतीजे प्यारे हैं
सबके लिए मिठाई है
इसने खास बनाई है
तुम इस पर ललचाओ ना
मुँह में पानी लाओ ना

– इन्दौर (म. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०७/२०२५ प्रेषण तिथि ३०/०७/२०२५ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २५०/- १५ वर्षीय सदस्यता २५००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

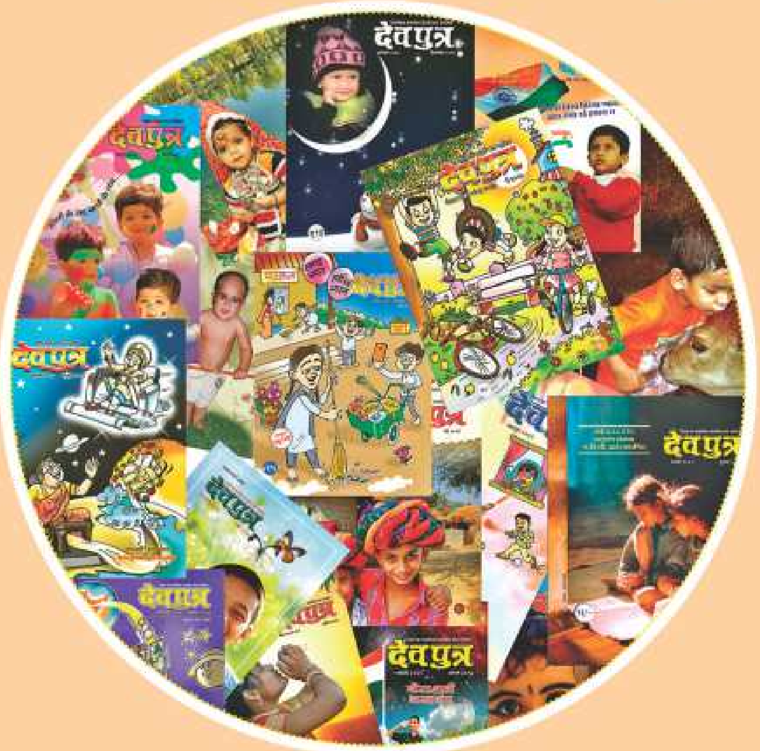

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी